हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2014 वर्ष 13 अंक 02

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

सीख

डरते सब संसार के डर से रब का डर बैठाओ
मन की वह सब बातें जाने यह सबको समझाओ
भूखे को दें खाना भाई प्यासे को दें पानी
नंगे को कपड़े पहनाएं कहते हैं यह दानी
करो नौकरी या मज़दूरी मेहनत की हो रोटी
मालिक ने यदि खेत दिये हैं करो तुम अच्छी खेती
सच्चा हो व्यापार तुम्हारा झूट न उसमें आए
जो भी तुमसे बात करे वह स्वाद प्रेम का पाए
जो अपनाए सीख हमारी मन का सुख वह पाए
अपनी कोशिश यही है भाई हर मानव सुख पाए

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 7275527805

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
दहशत गर्दी (आतंकवाद)	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	12
हुब्बे रसूल सल्ल0 का तकाजा	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	15
इख़वानुल मुस्लिमून का इस्लाम	इमाम हसनुल बन्ना शहीद रह0	16
ज़िक्रे महबूबे ख़ुदा	इदारा	22
ताईद व नुसरते इलाही का मेयार	अल्लामा यूसुफ करज़ावी	23
अर्जे हाल (पद्य)	ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन हाली रह0	30
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	31
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	36
पहले खुद को देखिए	मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद- और जो लोग तुम में से वफात पा जायें और छोड़ जायें अपनी औरतें तो चाहिए कि वह औरतें इंतिज़ार में रखें अपने आपको चार महीने और दस दिन[1], फिर जब पूरा कर चुकें अपनी इद्दत को तो तुम पर कुछ गुनाह नही उस बात में कि करें वह अपने हक़ में काइदे के मुवाफ़िक़[2] और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है[234] और कुछ गुनाह नही तुम पर इसमें कि इशारे में कहो पैग़ामे निकाह उन औरतों का या छुपा रखो अपने दिल में, अल्लाह को मालूम है कि तुम अलबत्ता उन औरतों का ज़िक्र करोगे लेकिन उनसे निकाह का वादा न कर रखो छुप कर मगर यही कि कह दो कोई बात रिवाजे शरीअ़त के मुवाफिक़ और न इरादा करो निकाह का यहाँ तक की पहुँच जाये इद्दते मुकर्ररा अपनी इंतिहा को[3] और जान रखो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ तुम्हारे दिल में है सो उससे डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह बख़्शने वाला है तहम्मुल करने वाला है[4(235)] कुछ गुनाह नही तुम पर अगर तलाक़ दो तुम औरतों को उस समय कि उनको हाथ भी न लगाया हो और न मुकर्रर किया हो उनके लिए कुछ महर और उनको कुछ खर्च दो मक़्दूर (हैसियत) वाले पर उसके मुवाफिक है, और तंगी वाले पर उसके मुवाफिक जो खर्च कि काइदे के मुवाफिक है लाज़िम है नेकी करने वालों पर[5](236)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. पहले गुज़र चुका है कि तलाक़ की इद्दत में तीन हैज (रज) इंतिजार करे अब फरमाया कि मौत की इद्दत में चार महीने दस दिन इंतिजार करे अगर इस मुद्दत में मालूम हो गया कि औरत को गर्भ नहीं तो औरत को निकाह की इजाजत होगी वरना बच्चे के जन्म या गर्भपात के बाद इजाज़त होगी इसकी व्याख्या सूर—ए—तलाक़ में आयेगी हकीकत में तीन हैज़ या चार महीने दस दिन गर्भ के इंतिजार और उसके मालूम करने के लिए मुकर्रर फरमाये।

2. जब बेवा औरतें अपनी इद्दत पूरी करलें यानी गैर गर्भ वाली औरतें चार माह दस रोज़ और गर्भ वाली बच्चे के जन्म या गर्भपात तक का समय, तो उनको दस्तूरे शरीअ़त के मुवाफिक़ निकाह कर लेने में कुछ गुनाह नहीं और बनाव श्रृंगार और खुशबू सब हलाल हैं।

3. **खुलासः** सारांश आयत का यह हुआ कि औरत शौहर के निकाह से जुदा हुई तो जब तक इद्दत में है तो किसी दूसरे को जायज़ नही कि उससे निकाह कर ले या साफ वादा करा ले या साफ पयाम भेजे लेकिन अगर दिल में नियत रखे कि बाद

शेष पृष्ठ.....29 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

जुमे के दिन की फजीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

अनुवादः पस जब नमाज़ पूरी हो जाये तो ज़मीन पर फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम फलाह पाओ।

(सूर—ए—जुमा—2)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बेहतर दिन जुमा का दिन है, उसी दिन हज़रत आदम अ0 पैदा हुए, उसी दिन जन्नत में दाखिल किये गये और उसी दिन जन्नत से निकाले गये।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स जुमे के दिन घर से अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद में आये और खूब ध्यान से खुत्बा सुने तो इससे लेकर उस जुमे तक की सारी गल्तियाँ माफ हो जायेंगी बल्कि तीन दिन और ज़ियादा, और जो खुत्बे के समय कंकरियों से खेलता रहा उसने बेकार काम किया।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पाँच नमाज़ें और गत जुमे से वर्तमान जुमे तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक की सारी गल्तियाँ माफ हो जायेंगी मगर जब कि कबीरा गुनाह से अपने को बचाता रहे। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से और हज़रत उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम ने मिम्बर (मंच) पर तशरीफ रखते हुए फरमाया, लोग जुमे की जमाअ़त छोड़ने से बाज़ रहें, वरना अल्लाह तआला उनके दिलों पर मुहर लगा देगा और फिर उनकी गिन्ती गाफिलों में हो जाऐगी।

(मुस्लिम)

गुस्ले जुमा–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो जुमे की नमाज़ के लिए आये तो उसे गुस्ल कर लेना चाए।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर बालिग़ पर जुमे का गुस्ल ज़रूरी है। (बुख़ारी—मुस्लिम) (यह ज़रूरी भी ताकीद के लिए है वरना जुमे का गुस्ल फिक्ह की किताबों में सुन्नत लिखा गया है)

हज़रत समरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी नें जुमे के दिन वुज़ू किया तो उसने अच्छा किया और जिसने गुस्ल किया तो गुस्ल जियादा अफ़ज़ल है।

(अबू दाऊद—तिर्मिज़ी)

शेष पृष्ठ.....14 पर

दहशत गर्दी (आतंकवाद)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

दहशत गर्दी अर्थात भय फैलाना जिस को हिन्दी में आतंकवाद कहा जाता है। दहशत गर्दी फारसी शब्द है, दहशत का अर्थ है भय और गर्दी से तात्पर्य यहाँ फैलाने से है। गरदी का इम्लाहम पूरे र से भी शुद्ध जानते हैं और आधे र से भी फारसी अरबी के जिन शब्दों के बीच जो अक्षर साकिन (गति हीन) होता है और उसके पश्चात वाला अक्षर मुतहर्रिक (गतिशील) होता है उसको हम हिन्दी में आधा लिखना भी सही समझते हैं और पूरा भी लिखना शुद्ध जानते हैं जैसे गरदी, गर्दी, गरमी, गर्मी, फारसी, फार्सी आदि।

दहशत के प्रायः तीन कारण होते हैं—

1. डकैती करना, दहशत (भय) फैला कर लोगों को अपने घरों में बैठ जाने पर विवश कर देना, ताकि वह जिसे लूटना चाहें सरलता से लूट सकें या किसी को अपहरण (इग़वा) करना चाहें तो कर लें प्रत्यक्ष है इस अत्याचार की अनुमति न कोई धर्म देता है, न कोई विधान।

2. आतंकवाद का एक कारण यह होता है कि किसी के घर परिवार वाले जान से मार दिये जाते हैं परन्तु उनमें न बदला लेने की शक्ति होती है और न शासन किसी तरह से उनको संतुष्ट कर पाता है ऐसे में वह आतंकी हो जाता है, आतंक द्वारा वह अपनी भड़ास निकालता है। इस आतंक की भी किसी धर्म में अनुमति नही है और न किसी विधान में।

3. कुछ लोग शासन में अपनी भागीदारी चाहते हैं परन्तु उसमें विफल रहते हैं तो वह आतंक द्वारा शासन तथा प्रजा को भयभीत करके अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश करते हैं।

कुछ आतंक धार्मिक आधार पर होते हैं खुदा की पनाह सुन्नी शीओं को निशाना बनाते हैं और शीआ सुन्नियों को, हिन्दू मुसलमानों को भयभीत करते हैं तो मुसलमान हिन्दुओं को और यह आतंक सब से अधिक कष्ट दायक, हानिकारक और निन्दनीय है, किसी भी देश का कोई क़ानून इस की अनुमति नहीं देता अपितु इसे अपराध बता कर आतंकियों को कठोर दण्ड देता है। परन्तु क्या किया जाय यह सारे ही आतंक अपने देश ही में नहीं विश्व समाज में विद्यमान हैं विशेष कर मुस्लिम देशों में। आप मिश्र, शाम, लीबिया, यमन इराक़, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान, बंग्ला देश को देख लें कि वहाँ क्या हुआ है और क्या हो रहा है? लाखों जानें आतंकवादियों ने ले डालीं और यह सिलसिला रुक नही रहा है।

आतंक के रूप— हमारे बचपन में भी आतंकी थे, उस आतंक में रात के समय आतंकी भांति भांति की डरावनी आवाजें निकालते, बन्दूकें इतनी आम न थीं लेकिन आतंकी कुछ बन्दूकें प्राप्त कर लेते और रात के समय हवाई फाइर करते थे साथ में गोले दाग़ते लगता कि बहुत से बन्दूकें

से फाइर हो रहे हैं, लोग अपने अपने घरों में चुपकी साध लेते और आतंकी अपना काम कर के चले जाते शाज़ व नादिर (यदा कदा) ही लोगों की जाने जातीं परन्तु यह विज्ञान का युग है धन की अधिकता है, आतंकियों के पास राइफलें हैं, बम हैं, बमों की नई–नई तकनीकें हैं, धन देकर प्राण खरीदे जाते हैं, या टेक्निक से नव युवकों को प्राण प्रस्तुत करने पर विवश किया जाता है वह आदमियों की भीड़ में अपने को बम से उड़ा कर सैकड़ों बे गुनाहों की जाने ले लेते हैं, लाखों की कार महत्वपूर्ण स्थानों पर ड्राइवर समेत बम विस्फोट से उड़ा कर सैकड़ों जाने ले ली जाती हैं यह उन्नतिशील आतंक पूरे जगत में चल रहा है और बड़ी लज्जा तथा शर्म के साथ कहना पड़ता है कि यह इस्लामी देशों में अत्यधिक है।

क्या मस्जिदों, मन्दिरों, गिरजा घरों और बाज़ारों में बम विस्फोट करके बे गुनाहों की जान लेने वाले इस्लाम का नेतृत्व कर रहे हैं? इस्लाम का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं? कदापि नहीं। यह तो इस्लाम का रूप बिगाड़ रहे हैं, यह इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं, वह किस मुँह से कह सकते हैं कि आओ इस्लाम की ओर यह अम्न व शन्ति का मज़हब (धर्म) है, अपनाओ इस्लाम को यह मानव जाति ही नहीं अपितु समस्त सृष्टि के लिए दया (रहमत) है। वह तो इस्लाम का मुअ़जिज़ा (चमत्कार) है और अल्लाह का फैसला है कि इस दशा में भी इस्लाम बराबर फैल रहा है, अल्लाह ने इस्लाम की सुरक्षा का ज़िम्मा ले रखा है अतः वह सुरक्षित भी है और भाग्यवानों को इससे लाभान्वित भी कर रहा है वरना इन आतंकियों ने तो इस्लाम के बिगाड़ने में कोई कसर न उठा रखी है परन्तु वास्तव में वह अपने ही को बिगाड़ रहे हैं और अपनी दुन्या व आख़िरत दोनों ही बिगाड़ रहे हैं।

निवारण– इस आतंकवाद का समाधान, आतंकवाद का निवारण कैसे हो? इस विषय में एक विधि तो यह है कि शासन सतर्क हो और आतंकियों को पकड़–पकड़ कर इबरत नाक (भयोत्पादक) दण्ड दे परन्तु इसका क्या किया जाए जिस देश में दस से लेकर करोड़ों का घूस चलता हो वहाँ आतंकी हों या अत्याचारी बड़ी सरलता से बच सकते हैं अपितु इसका उल्टा भी देखा गया है कि उन लोगों को आतंक का आरोप लगा कर जेल भेज दिया जाता है जिनका आतंक से कोई सम्बन्ध नही होता इस ग़लती से तो आतंक को बढ़ावा मिलेगा, लेकिन सभी पुलिस वाले ऐसे नहीं होते कोशिश में ढील नही चाहिए। दूसरा प्रभावकारी (मुअस्सिर) प्रयास आतंक तथा अत्याचार को समाप्त करने का यह हो सकता है कि धर्म गुरु लोग अपने–अपने क्षेत्र में लोगों को बताएं कि आतंकवाद तथा अत्याचार से लोक प्रलोक दोनों में ख़ुदा का ख़ौफ़ (ईश भय) पैदा करें, निः सन्देह बहुत से धर्म गुरु आतंकवाद को और हवा दे रहे हैं, परन्तु सत्य बोलने में किसी को निराश न होना चाहिए उनको मालिक के भरोसे पर अपना काम करते रहना चाहिए।

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मआफी और रहम का दिन है खूँरेज़ी का नहीं–

जब सअद बिन उबादा रज़ि0 जो अन्सार दस्ते के अमीर थे, उस जगह से जहाँ अबू सुफियान इस्लामी लश्कर को देखने के लिए खड़े किये गये थे, गुज़रे और उनकी नज़र काफिरों पर पड़ी जिन्होंने इस्लाम दुश्मनी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और उन्होंने ख़ुदा के नेक बन्दों को जुल्म व सितम का ऐसा निशाना बनाया था, जिसके नतीजे में वह अपने माल व मता और वतन छोड़ कर मदीने में पनाह लेने पर मजबूर हुए थे और अब उनके मरकज़ी शहर मक्का में उन्हीं मज़लूम मुसलमानों का दाख़िला फातिहाना शान से हो रहा है, इस पर उन्होंने कहा "आज ताकत के इज़हार और खूँरेज़ी का दिन है, आज काबा में यह सब जायज़ होगा, आज अल्लाह तआला ने कुरैश को ज़लील किया है, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दस्ते में अबू सुफियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपने सुना सअद ने अभी क्या कहा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या कहा? उन्होंने वह सब दोहरा दिया, सअद के जुमले को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुशफिकाना (स्नेहपूर्ण) जुमले से बदलते हुए फरमायाः नही! आज रहम और मआफी का दिन है। आज अल्लाह तआला कुरैश को इज़्ज़त अता फरमायेगा और काबा की अज़मत बढ़ायेगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सअद रज़ि0 को बुलवा भेजा और मक्के वालों को अच्छा असर देने के लिए उनके गिरोह का परचम उनसे लेकर उनके साहबज़ादे क़ैस रज़ि0 की तरफ मुनतकिल कर दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बज़ाहिर इस मसलेहत से किया कि हज़रत सअद के जुमले से कुरैशियों में कबाइली असबियत (पक्षपात) का एहसास न उभरे, क्योंकि यह जुमला मदीने के एक कबीले के एक अमीर के मुँह से निकला था और अरबों में किसी बेइज़्ज़ती के जुमले से जल्द असबियत और गुस्सा पैदा हो जाता था और कशमकश शुरु हो जाती थी, और अभी यह कुरैशी इस्लामी रूह के पूरी तरह हामिल (भारवाहक) नही बन सके थे, कि यह खतरा न समझा जाता, लेकिन आपने परचम उनसे ले कर उनके साहबज़ादे को दिया इस तरह गोया उन्हीं के पास रहा और उनको इस बात का एहसास भी नहीं हुआ होगा कि उनका परचम उनसे लिया गया।

इस तरह एक हर्फ की तब्दीली और एक हाथ को दूसरे हाथ से तब्दील कर देने से (जिनमें से एक बाप

का हाथ दूसरा बेटे का) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सअद बिन उबादा (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामे सबके सामने थे) की मामूली दिलशकनी के बग़ैर अबू सुफियान की जो कुरैश के कबीले के जो कि पूरे अरब में मोहतरम (सम्मानीय) समझा जाता था, नुमाईन्दे और सरदार थे, (जिनकी तालीफ क़लब की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान हकीमाना बल्कि मुजिज़ाना तरीके पर अंजाम दे दिया, जिससे बेहतर तरीके पर तसव्वुर में आना मुश्किल है इस तरह एक ओर कुरैश के उस वक्त तक के सरदार के बुरे तअस्सुर से एक ओर कुरैश के लोगों के बुरा तअस्सुर कायम करने से बचा लिया और दूसरी तरफ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सअद बिन उबादा रज़ि0 को नाखुश करने से परहेज़ किया, जिन्होंने इस्लाम के लिए बड़ी खिदमात अंजाम दी थीं, इसलिए उनसे परचम लेकर बेटे को देने से गोया परचम उन्हीं के पास रहा और उनको यह एहसास भी दिला दिया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुश्मनों के साथ भी रहमदिली और रवादारी का रवय्या पसंद करते हैं।

इधर मुसलमानों का फ़ातिहाना दाख़िला हो रहा था और दूसरी तरफ कुरैश के कुछ टेड़े और बाग़ी क़िस्म के लोग मक्का के "खनदमा" महल्ले मे जमा हो रहे थे ताकि अपना ज़ोर दिखाने की कोशिश कर सकें उनमें इस मकसद से हमास बिन क़ैस जब हथियार संभालने गए तो उनकी बीवी ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुकाबले में आज कोई ठहर न सकेगा, उसने कहा कि मुझे तो यह उम्मीद है कि हम उनमें से कुछ लोगों को पकड़ कर तुम्हारा नौकर बना कर ले आयेगें, चुंनांचे उन लोगों का सामना मुसलमानों के मुकाबले में आने पर मुकाम खनदमा में हज़रत खालिद रज़ि0 के फौजियों से हुआ मुकाबले पर आने के नतीजे में उनमें कुछ लोग तो मारे गये और कुछ लोग शिकस्त खा कर भागे, हमास अपनी बीवी के पास पहुंचे और घबरा कर कहने लगे कि जल्दी से दरवाज़ा बन्द करो, उन्होंने कहा कि जो तुम कह रहे थे ऐसा कर लायेंगे क्या हुआ?

हमास ने कहाः सब साथी भाग गए मुसलामनों की तलवारें ऐसी चलीं कि गर्दनें कट गयी[1]।

हक़ के ग़ल्बे (प्रभुत्व) का ऐलान–

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झण्डा हजून में लगाया गया और मुहाजिर व अंसार आपके इर्द गिर्द जमा हो गए यहां तक कि आप मस्जिद में दाखिल हुए। आपने हजरे असवद को बोसा दिया फिर बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में कमान थी, और काबा के अन्दर और काबे के इर्द गिर्द 360 बुत लगे हुए थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमान से उनको मारते जाते थे और कहते जाते थे–

"हक़ आया और बातिल पसपा हुआ और बातिल तो पसपा होने वाली चीज़ है" (सूर–ए–बनी इस्राईल–18)

---

1. ज़ादुल मआद, भाग–3, पृ0 405

और "हक़ आ गया और बातिल अब कुछ करने के क़ाबिल नहीं रहा" (सूर–ए–सबा–49)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते जाते थे और बुत गिरते जाते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सवारी पर बैठ कर काबा का तवाफ फरमाया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐहराम में नही थे क्योंकि उमरे की नीयत से दाखिल नहीं हुए थे, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तवाफ कर चुके तो काबा के क़लीद बदरार (कुंजी रखने वाले) हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाया और उनसे काबे की चाबी हासिल की और काबे का दरवाज़ा खुलवाया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसमें दाखिल हुए वहां भी अन्दर तस्वीरें बनी हुई थीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा की हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तस्वीरें बनी हुई हैं और वह तीरों से फाल निकाल रहे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह तआला इन लोगों को समझे, खुदा की कसम इन नबियों ने तीरों से कभी फाल नहीं ली। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया और यह तस्वीरें तीरों से निकाली गयीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया और वहां अन्दर नमाज़ पढ़ी और अन्दर ही कई जगहों पर गऐ और तकबीर और वहदानियत के अल्फ़ाज़ कहे, फिर दरवाज़ा खोला, सामने कुरैश के लोग मस्जिद में भरे हुए थे, सफें लगाए हुए थे और इंतिज़ार में थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ क्या मामला करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरवाज़े के दोनों हिस्सों पर हाथ रख के फरमाया कि कोई माबूद नहीं सिवाए खुदा के वह तनहा है कोई उसका शरीक नहीं उसने अपने वादे को सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और अपनी फौज को ग़ालिब किया और दुश्मन की जमाअतों को तन्हा उसने शिकस्त दी और फरमाया–

सुन लो! हर गलत बात और ग़लत माल और नाजाएज़ खून मेरे पैरों के नीचे, यानी खत्म किया जाता है, सिवाए बैतुल्लाह की कलीद बरदारी और हाजियों को पानी पिलाने की ज़िम्मेदारी के कि वह जिसके पास थी उनके पास रहेंगी, बाकी ज़िम्मेदारियों को आपने उनके साबिका लोगों से हटा दिया और मुसलमानों के हाकिम की ज़िम्मेदारी में दे दिया। आपने कत्ल और बदला लेने के लिससिले में कुछ क़वानीन का ऐलान किया और कुरैश को मुखातिब करके कहा कि ऐ कुरैशियो!

तुम में जो जाहिली गुरूर था बेशक अल्लाह ने उसको खत्म कर दिया और तुम लोग अपने बाप दादा की बड़ाई पर फ़ख्र (गर्व) करते थे अल्लाह ने उस (ऊँच–नीच) को खत्म कर दिया, सुन लो! सब लोग आदम के बेटे हैं और आदम मिट्टी से बनाये गये हैं फिर यह आयत पढ़ी "बेशक हमने तुमको क़ौमों और क़बीलों

की शक्ल में रखा है ताकि एक दूसरे की तुम पहचान कर सको, तुममें इज्ज़त वाला वही होगा जो अल्लाह तआला के यहाँ जियादा नेक साबित होगा'' (सूर–ए–हुजरात–13)

फिर फरमाया : ऐ कुरैश के लोगो! तुम्हारा क्या खयाल है हम आज तुम्हारे साथ क्या मामला करेंगे? कुरैशे मक्का ने कहाः हम उम्मीद अच्छी ही रखते हैं जो एक शरीफ भाई दूसरे शरीफ भाई के साथ करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस पर यह नहीं फ़रमाया कि आज से पहले शरीफ़ भाई शरीफ भाई के साथ क्या कर रहा था बल्कि इसके बजाए यह फ़रमाया : मैं तुम से आज वही कहता हूँ जो हज़रत यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशारा उस बात की तरफ था कि हज़रत यूसुफ को उनके भाइयों ने कुएं में फेंक दिया था और समझते थे कि वह खत्म हो जायेंगे फिर अल्लाह ने उनको इज़्ज़त दी, बादशाहत दी और यह लोग अपनी माली परेशानी की वजह से उनके पास मदद के लिए आए। वह उस वक्त तक उनको एक ग़ैर शख्स समझते थे उनको जब वही भाई मालूम हुए जिनको वह अपने नज़दीक मौत के मुँह में डाल चुके थे तो शर्मिन्दा हुए और मआफी मांगी तो उन्होंने यह कहा कि जाओ तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, तुम सब आज़ाद हो। फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में बैठ गए और काबे के कलीदबरदार (कुंजी रखने वाले) हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाया और कहा कि आज ''एहसान और वफ़ा'' का दिन है, इसमें इस बात का इशारा था कि हिजरत से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान बिन तलहा से काबा खोलने की दरख़्वास्त की थी उन्होंने आपके दीने इस्लाम के नापसन्दीदगी के तौर पर इनकार कर दिया था, इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था कि एक दिन वह आयेगा, जब कुंजी हमारे हाथ में होगी हम जिसको चाहेंगे देंगे। इसको उस्मान बिन तलहा ने बेमतलब समझते हुए कहा था कि क्या ऐसा भी दिन आयेगा और क्या उस वक्त सब कुरैशी मर चुके होंगे?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुंजी उनको वापस की, जबकि हज़रत अली और दूसरे हज़रात चाह रहे थे कि अब कलीदबरदारी की ज़िम्मेदारी उनको दे दी जाये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा कि आज एहसान व वफा का दिन है और हज़रत उस्मान बिन तलहा से कहा कि कुंजी तुम्हारे पास ही रहेगी। (यानी नसलन बाद नसल) (पैत्रिक) और तुमसे कोई छीनेगा तो वह ज़ालिम होगा।

उस्मान बिन तलहा कहते हैं कि जब मैं कुंजी लेकर खुशी खुशी चलने लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर मुझे आवाज़ दी और फरमाया क्यों उस्मान! जो बात मैंने कही थी वह पूरी हुई या नहीं? अब मुझे

वह बात याद आ गई जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत से पहले फरमाई थी कि एक रोज़ तुम यह कुंजी मेरे हाथ में देखोगे, मैंने कहा कि बेशक आपका इरशाद पूरा हुआ, और उस वक़्त मैं कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यह कुंजी यह कह कर दी थी कि मैं यह अमानत आपके सुपुर्द करता हूँ क्योंकि मुझे अल्लाह तआला की तरफ से इसी का हुक्म हुआ है, इसी मौक़े पर इस आयत तर्जुमा "अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत रखने वालों की अमानत उन्हें बराबर वापस करो"। (सूरःनिसा–58) का नुज़ूल हुआ था, चुनांचि आज चौदह सौ साल बाद तक काबे की कलीद बरदारी उन्हीं के पास है[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल हबशी रज़ि0 से कहा कि काबे की छत पर खड़े होकर अज़ान दें, उस वक़्त कुरैश के बड़े बड़े लोग वहां थे, उनमें से एक ने उनकी तरफ इशारा करते हुए कहा कि जिनके गुलाम हज़रत बिलाल रह चुके थे यानी उसैद अगर यह मनज़र देखते कि गुलाम को सबसे सम्मानित मुक़ाम की सम्मानित और ऊँची जगह खड़ा किया गया तो अपनी कितनी बेइज़्ज़ती महसूस करते[2], फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी रिश्ते की बहन उम्मे हानी के घर तशरीफ ले गए वहां गुस्ल फरमाया और आठ रकअतें शुकराने की पढ़ी[3] और जब मक्का की फतह की यह कार्यवाई मुकम्मल हो गई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबको अमान देने का ऐलान कर दिया और कुछ आदमी जो काबिले सज़ा थे उनको अलग किया कि उनको क़त्ल किया जा सकता है लेकिन उनमें से अक्सर ने जाकर मआफी मांग ली और उनको भी परवान–ए–मआफी मिल गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफा भी यही थी कि अगर जानी दुश्मन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से माज़रत करके मआफी मांग ले तो मआफ ही कर देते थे, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चन्द ग्रुप भेजे कि मक्के के इर्द गिर्द जगह जगह बतों के जो अड्डे बना लिये गये थे उनको खत्म कर दिया जाये और आपकी तरफ से मक्के में यह ऐलान किया गया कि जो भी अल्लाह और उसके रसूल पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है वह बुत न रखे और अगर बुत हों तो उन बुतों को तोड़ दे।

इस तरह पूरे अरब द्वीप के कुफ़्फ़ार का मरकज़ी महाज़े जंग खत्म हो गया और 20–21 साल से जो अदावत व जुल्म व जियादती मुसलमानों को मक्के वालों से झेलनी पड़ रही थी, उसका ख़ात्मा हो गया, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी के साथ बदले वाली कार्यवाई न की, सभी को मआफ़ कर दिया।

---

1. सीरते इब्ने हिशाम 2/4127
2. सीरते इब्ने हिशाम 2/413
3. जादुल मआद 3/410 ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, तो बाहर लाया जाता है, बहुत से लोग अपने इस प्रिय सम्बन्धी, या बिछुड़ने वाले मित्र या महापुरुष के अन्तिम दर्शन करते हैं। अब नमाज़ जनाज़ा आरम्भ होती है, जिसमें सम्मिलित होना अति पुण्यात्मक कार्य है। लोगों के धार्मिक संवेगों, रुचियों एवं अभिरुचियों और मरने वाले के सम्बन्धों की व्यापकता एवं अवस्था के अनुसार जनाज़े में सम्मिलित होने वालों की संख्या कम अथवा अधिक होती है। यह नमाज़ भी जमाअत के साथ है, परन्तु इसमें रुकू तथा सजदा नहीं। सब लोग पंक्तियों में खड़े हो जाते हैं, एक, तीन, पाँच, सात अथवा किसी विषम संख्या में पंक्तियां बन जाती हैं, और कोई विद्वान अथवा नेक आदमी या मुहल्ले की मस्जिद का इमाम थोड़ा सा आगे बढ़ कर जनाज़े को सामने रख कर उसके सीने की सीध में खड़ा हो जाता है और नमाज़ आरम्भ हो जाती है। इस नमाज़ में चार तकबीरें हैं[1] सब कुछ ऐसे स्वर में पढ़ा जाता है कि दूसरे का ध्यान भंग न हो। पहली तकबीर के बाद वह दुआ पढ़ी जाती है, जो हर नमाज़ में प्रथम बार अल्लाहु अकबर कह कर पढ़ी जाती है और जिसकी व्याख्या पाँचो नमाज़ों के संदर्भ में आयेगी, दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ़ (जिसका वर्णन पाँच वक्त की नमाज़ों के बारे में सम्बन्धित अध्याय में आयेगा) पढ़ा जाता है। बहुत से विद्वानों तथा मुसलमानों की विभिन्न विचारधाराओं से सम्बद्ध व्यक्ति इस अवसर पर भी सूर—ए—फ़ातिहा[2] का पढ़ना आवश्यक समझते हैं, तीसरी तकबीर के बाद सब मुसलमान (बिना स्वर निकाले अग्रलिखित दुआ पढ़ते हैं):—

"ऐ अल्लाह! हमारे ज़िन्दा और मुर्दा, उपस्थित एवं अनुपस्थित, छोटे तथा बड़े, पुरुष तथा स्त्री को क्षमा प्रदान कर। ऐ अल्लाह! हममें से जिसको जीवित रखे उसे इस्लाम पर जीवित रख और जिसको तू दुन्या से उठा उसको ईमान पर उठा"।

जनाज़ा यदि किसी नाबालिग़ बच्चे या बच्ची का है, तो ऊपर लिखित दुआ के स्थान पर एक दूसरी दुआ पढ़ी जाती है जिसका अर्थ निम्नांकित है:—

"ऐ अल्लाह इस बच्चे को अगुआ (पेशरौ), हमारे लिए प्रतिदान एवं भण्डार और हमारे लिए क़यामत में सिफ़ारिश करने वाला बना और इसकी सिफ़ारिश स्वीकार कर"।

जनाज़े को काँधा देना और क़ब्र तक साथ चलना—

चौथी तकबीर के बाद सलाम फेरा जाता है (अर्थात

---

1. एक बार "अल्लाहु अक़बर" कहना एक तकबीर कहलाती है।
2. कुरआन मजीद की सबसे पहली सूरत।

नमाज़ जनाज़ा समाप्त हो जाती है) और लोग जनाज़े को काँधा देते हुए क़ब्रिस्तान ले जाते हैं। शरीअत में काँधा देने, और मय्यत को उसके अन्तिम स्थान (कब्र) तक पहुँचाने, उसको दफ़न करने तक वहाँ ठहरने को बहुत महत्व दिया गया है, और इसको अति पुण्यात्मक कार्य बताया गया है। अतः आम तौर पर लोग कांधा देने की कोशिश करते हैं और क़ब्रिस्तान की दूरी कितनी ही अधिक हो, मौसम कितना ही कष्टदायी हो, जनाज़ा हाथों हाथ मुसलमानों के काँधों पर शीघ्र ही क़ब्रिस्तान पहुँच जाता है। अब वर्तमान नागरिक जीवन एवं संस्कृति में कुछ बड़े–बड़े नगरों में जहाँ साधारणतया क़ब्रिस्तान बहुत दूर होते हैं, लाश गाड़ी पर जनाज़ा ले जाने का रिवाज हो चला है। मजबूरी और क़ब्रिस्तान की दूरी को छोड़ कर, मसनून (नियमानुसार) तरीक़ा वही है जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है।

क़ब्र में रखने का तरीक़ा और मिट्टी देने का नियम–

क़ब्र सामान्यतः पहले से तैयार होती है। जनाज़ा पहुंचने पर कुछ लोग क़ब्र में उतर जाते हैं और मय्यत को काबे की दिशा में रख देते हैं, फिर उस पर बनगे या तख़्ते रख कर ऊपर से मिट्टी डाल देते हैं, जिसे मय्यत को मिट्टी देना कहते हैं। मिट्टी देते समय प्रायः क़ुरआन मजीद के निम्नलिखित शब्द ज़बान पर होते हैं–

"मैंने तुमको इसी भूमि से पैदा किया और इसी में हम तुमको वापस करेंगे और फिर हम इसी से तुमको दुबारा बाहर निकालेंगे"।

जब क़ब्र तैयार हो जाती है और ऊँट की पीठ के समान बन जाती है, उस समय विशिष्ट सम्बन्ध रखने वाले कुछ देर ठहर कर मय्यत के प्रति खुदा से क्षमा याचना हेतु कुछ कुरआन मजीद पढ़ते हैं, और यह क्रिया सुन्नत है।

शोक ग्रस्त घर के लोगों के लिए निकट सम्बन्धियों की ओर से खाने का प्रबन्ध करना और उनके दुःख के प्रति सहानुभूति प्रकट करना–

जब किसी घर में ग़मी हो जाती है और किसी का देहान्त हो जाता है तो साधारणतया उस दिन निकट सम्बन्धियों तथा मित्रों के घरों में, ग़मी वाले (शोकग्रस्त) घर के लोगों के लिए और उन सम्बन्धियों के लिए जो उस समय घर में एकत्र हो जाते हैं, खाना आता है। यह रिवाज इस विचारधारा पर आधारित है कि मय्यत वाले घर के लोगों के स्वयं भोजन तैयार करने और उसका प्रबन्ध करने का अवसर नहीं है। अतः उनको खाने पानी की चिन्ता से मुक्त करना तथा इस कार्य से बेफ़िक्र करना उचित है। वास्तव में यह एक सुन्नत है जो अभी तक इस्लामी समाज में चली आ रही है। मय्यत की हैसियत तथा उसके सम्बन्धों के अनुसार तीन वक्त या तीन दिन, नातेदारों तथा मित्रों के यहाँ से पका पकाया खाना आता है, और सब मिलकर खाते हैं।

सवाब पहुँचाने की प्रचलित प्रणालियाँ तथा उनमें भारतीय विचारधारा–

हिन्दुस्तान में मय्यत को सवाब पहुँचाने तथा मय्यत के खानों के कई ऐसे तरीक़े प्रचलित हैं, जो दूसरे इस्लामी देशों तथा इस्लाम के केन्द्र (अर्थात अरब) में नहीं पाये जाते, और उनके बारे में कदाचित् यहाँ के मुसलमानों ने भारत की प्राचीन प्रचलित परम्पराओं एवं पद्धतियों का अनुकरण किया है, और वह यहाँ के रीति–रिवाजों से प्रभावित हुए हैं। यथा–तीजा, चालिसवाँ, कुल आदि, जिनमें निर्धारित तिथियों तथा विशिष्ट कायदे क़ानून तथा अनेक रसमों की पाबन्दी की जाती है। धार्मिक महापुरुषों के उर्स की विचारधारा भी हिन्दुस्तानी है। इस शब्द (अर्थात् उर्स) से भी (जिसका अर्थ शादी है) दूसरे देशों के मुसलमान अनभिज्ञ हैं। सामान्य रूप से किसी बुजुर्ग (धार्मिक महानुभाव) की जन्म तिथि अथवा बरसी के अवसर पर बुजुर्ग से श्रद्धा रखने वाले एवं तीर्थ यात्री दूर दूर से आ कर एकत्र होते हैं, कुरआन मजीद का पाठ करते हैं, उनके नाम का लंगर किया जाता है और धनी तथा निर्धन सब खाते हैं। दूसरे देशों में यदि ऐसी कोई रस्म, किसी बुजुर्ग की पुनरास्मृत हेतु, उनके जीवन चरित्र का वर्णन करने और उनको सवाब पहुँचाने के लिए अदा की जाती है, तो उसको उर्स नहीं कहते, दूसरे नामों से याद करते हैं।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

हज़रत सलमान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने जुमे के दिन गुस्ल किया और अच्छी तरह से पाक हो कर तेल लगाया और इत्र लगा कर मस्जिद गया और दो आदमियों के मध्य जुदाई डालने से रुका रहा फिर जितनी नमाज़ मुक़द्दर हो चुकी थी पढ़ी और खामोशी के साथ इमाम का ख़ुत्बा सुना तो इस जुमे से ले कर अगले जुमे तक की सारी खताऐं (गलतियाँ) माफ हो जायेंगी (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस आदमी ने जुमे के दिन अच्छी तरह गुस्ल किया जिस प्रकार गुस्ले जनाबत (वाजिब गुस्ल) किया जाता है फिर (नमाज़े जुमा) के लिए गया तो गोया उसने एक ऊँट की कुर्बानी की और जो शख़्स उसके बाद गया तो उसने गाय की कुर्बानी की, और जो उसके बाद नमाज़ के लिए गया उसने एक दुम्बा कुर्बान किया, और जो उसके बाद गया उसने मुर्गी की कुर्बानी दी, और जो उसके बाद गया उसने गोया एक अण्डा ही ख़ैरात किया और अगर इमाम खुत्बे के लिए बाहर आ गया (और वह अभी तक पहुँच न सका) तो फरिश्ते भी अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ मशगूल हो कर सुनने लगते हैं। (बुख़ारी–मुस्लिम)

❖❖❖

हुब्बे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम का तक़ाज़ा

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के मुबारक महीने को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की मुबारक निसबत हासिल है, जिसकी वजह से रबीउल अव्वल के महीने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र की महफिलें सजती हैं नअ़त और दुरूद व सलाम से पूरी फ़ज़ा मुनव्वर हो जाती है, ज़ुलमत शिर्क व कुफ़्र काफूर हो जाते हैं और मुसलमानों के दिल हुब्बे नब्वी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम) से सरशार (मस्त) हो जाते हैं, ऐसे मुबारक मौके (अवसर) पर हम सबको यह अहद करना चाहिए था और अगर उस मौक़े पर अहद न किया हो तो अब अहद करें कि हम अपनी पूरी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में गुज़ारेंगे और सरवरे क़ायनात की हर हर सुन्नत पर अमल करेंगे, पानी पियेंगे तो उस तरह जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी पीते थे, खाना खाएंगे तो उस तरह जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाना खाते थे, ग़रज कि सोने जागने, चलने फिरने, दीन का काम करने, पड़ोसियों, रिश्तेदारों और आम मुसलमानों के साथ वैसा ही मुआमला करेंगे जैसा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करते थे, इसी तरह नमाज़ रोज़ा, जकात, हज और सदक़ा, इन्सानों के साथ हमदर्दी ग़म गुसारी, मुहताजों यतीमों और बेवाओं के साथ उसी तरह हुस्ने सुलूक (सद व्यवहार) करेंगे जैसा रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करते थे।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला का लिहाज़, उस का ख़ौफ उसकी रहमत व मग़फिरत की उम्मीद उसीसे मदद मांगना, उसके एक एक हुक्म पर दिल व जान से अमल करना, उससे महब्बत छोटों पर शफ़क़त करना, बड़ों की इज्ज़त और खिदमत करना, कमज़ोरों की मदद करना, अपनी कमाई उन पर खर्च करना हमारा शेवा (स्वभाव) होना चाहिए, तभी हम महब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दावा करने में सच्चे होंगे वरना ज़बान से तो हुब्बे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दावा होगा मगर अमल से महब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत दूर होंगे, अल्लाह हम को समझ दे और हुब्बे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तकाज़ों को पूरा करने की तौफीक़ से नवाजे।

आमीन।

❖❖❖

अलइख़वानुल मुस्लिमून का इस्लाम

इमाम हसनुल बन्ना शहीद रह0 (1906- 12 फरवरी 1949)

—प्रस्तुतिः फ़ैसल अहमद —हिन्दी लिपिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मुअ़ज़्ज़ज़ दोस्तो! बुरा न मानों मुझे यह कहने की इजाज़त दो, मेरा यह मक़सद हरगिज़ नहीं की इख़वान का कोई नया इस्लाम है, उस इस्लाम से मुख़तलिफ जो हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ले कर आये थे। मेरा मक़सद बस यह है कि मुसलमानों ने बाद में खुद अपनी तरफ़ से इस्लाम को बहुत सी सिफ़ात व खुसूसीयात और तारीफ़ात (विशेषताओं) व तसव्वुरात (कल्पनाओं) के जामें (वस्त्र) पहना दिये, और नरमी, वुसअ़त और लचक का निहायत ग़लत इस्तेमाल किया वरना उसके अन्दर तो बड़ी हिकमत थी। नतीजा यह हुआ कि तसव्वुरे इस्लाम (इस्लाम के समझने) में ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हुआ और दिलों में इस्लाम की मुख़तलिफ (विभिन्न) तस्वीरें नक़्श हो गईं, जो उस इस्लाम के मुताबिक़ या कुछ मुशाबेह (मिलती जुलती) या उससे बिल्कुल मुख़तलिफ़ (पृथक) थीं जिसकी बेहतरीन तस्वीर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाब–ए– किराम ने पेश की थी।

चुनांचे कुछ लोगों के नज़दीक़ बस इबादत की कुछ ज़ाहिरी शक्लों का नाम इस्लाम है अगर उन्होंने वह शक्लें इख़तियार कर लीं, या किसी को इख़तियार किये हुए देख लिया तो वह मुतमइन हो गये समझ गये कि उन्होंने इस्लाम की रूह पा ली। आम मुसलमान उसी तसव्वुरे इस्लाम से आशना (अवगत) हैं। कुछ लोगों के नज़दीक इस्लाम उसका नाम है कि अख़लाक़ अच्छे हों और रूहानियत (अध्यात्मिकता) जो अक़्ल व रूह (आत्मा) की मरगूब तरीन (रुचिकर) इल्मी ग़िज़ा है, पूरे जोश पर हो, और ज़ालिम व सरकश माद्दियत की आलाइशों (भौतिकता) की गन्दगियों से पाक हो।

कुछ लोगों की परवाज़ (उड़ान) बस इस हद तक है कि वह इस्लाम के जानदार अमली निज़ामों को तहसीन व अक़ीदत (श्रद्धा) की निगाहों से देखते हैं, इनके अलावा कोई और चीज़ देखने के वह रवादार नहीं, न किसी मसअले पर कुछ सोचने के लिए वह तैयार हैं। ऐसे लोग भी हैं जो इस्लाम को चन्द फरसूदा (घिसे पिटे पुराने) अक़ाइद (आस्थाओं) और तकलीदी आमाल (प्रचलित प्रथाओं) का मजमूआ़ समझते हैं, जिनके अन्दर कोई इफ़ादीयत (लाभ) नहीं न इनके होते हुए तरक्की का कोई इम्कान है चुनांचे वह इस्लाम और इस्लाम की तमाम बातों से दिल बरदाशता (ऊबे हुए) हैं।

यह कैफियत वाज़ेह तौर पर उन लोगों में नज़र आयेगी जो मग़रिबी कल्चर की आग़ोश (गोद) में पले हैं जिन्हें सही तौर से इस्लामी हक़ाइक़ से वाबसतगी के मवाक़े (अवसर) नहीं मिले

लिहाज़ा इन्होंने इस्लाम को समझा ही नहीं या वह ऐसे मुसलमानों के साथ रहे जिन्होंने इस्लाम की अच्छी तस्वीर नहीं पेश की। इस तरह उन्होंने इस्लाम की बिगड़ी हुई तस्वीर ही देखी। अच्छी और दिलकश तस्वीर देखी ही नहीं।

फिर उनके तहत भी बहुत सी क़िस्में हैं जिनमें से हर एक का तसव्वुरे इस्लाम (इस्लाम का अर्थ) दूसरों के तसव्वुरे इस्लाम से कम व बेश मुख़तलिफ़ (अलग) है, बस कुछ निगाहें ऐसी होंगी जो इस्लाम की हक़ीक़त (वास्तविकता) से आश्ना हुई होंगी। चूंकि ऐसी ही इस्लाम की यह मुतअद्दद तस्वीरें ज़ेहनों में बैठी हुई हैं, इसलिए इख़्वान को समझने में भी इनके दरमियान नुमायां इख़्तिलाफ (मतभेद) हुआ कुछ लोग तो "इख़्वान" को महज़ एक तब्लीगी व नसीहत करने वाली जमाअ़त समझ बैठे जिसे ले दे के बस यही फिक्र रहती है कि वह कुछ नसीहतें कर दे और आख़िरत की याद ताज़ा करके दुन्या से बेरग़बती (घृणा) पैदा करदे कुछ लोग इख़्वान को तसव्वुफ़ (ईश भक्ति) का एक तरीक़ा समझते हैं जो लोगों को ज़िक्र व अज़कार और मुख़तलिफ़ इबादतों का आदी बनाते हैं और जुहद (सन्यास) और दुन्या से बेरग़बती की तालीम देते हैं।

बस कुछ ही लोग ऐसे हैं जिन्होंने महज़ दूर से सुन्ने पर इक्तिफ़ा (बस) नहीं किया न अपने मज़ऊमाँ (समझे हुए) तसव्वुरे इस्लाम का जामा चुस्त किया। बल्कि उनसे करीब हुए, कुछ घुले मिले, नज़दीक से उनकी हक़ीक़त पहचानी, इल्मी और अमली तौर पर उनकी दअ़वत समझने की कोशिश की। इस लिए मैने चाहा की आपके सामने मुख़तसरन इस्लाम का मफ़हूम और उसकी वह तस्वीर पेश कर दूं जो "इख़्वान" के ज़ेहनों में है ताकि वह असास (आधार) जिसकी हम दअ़वत देते हैं और जिस पर फ़ख़्र (गर्व) महसूस करते हैं वह बिलकुल वाज़ेह और रौशन हो।

1. हमारा अक़ीदा (विश्वास) है कि इस्लाम के अहक़ाम और उसकी तअ़लीमात बहुत जामेअ़ (व्यापक) और दुन्या व आख़िरत (लोक परलोक) के तमाम पहलुओं पर हावी है और जिन लोगों का गुमान यह है कि वह महज़ इबादात से तअल्लुक रखते या खालिस रूहानी पहलुओं से बहस करती हैं, उनका गुमान बिल्कुल गलत और वहम का शिकार है क्योंकि इस्लाम अकीदा भी है, इबादत भी है, वतन भी है, क़ौमियत भी है, दीन भी है, हुकूमत भी है अमल भी है, रूहानियत भी है, कुर्आन भी है, तलवार भी है, कुर्आन करीम इन सारी बातों का एलान करता है, वह इन सबको अस्ल दीन और रूहे इस्लाम समझता है, और इन सब की बराबर ताकीद करता है। चुनांचि इरशाद है अनुवादः (और अल्लाह ने तुम्हें जो कुछ दिया है, उसमें रहते हुए तुम आखिरत के तालिब बनो, और दुन्या में अपने हिस्से की जिम्मेदारी फ़रामोश न करो और भलाई करो जिस

तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है) तुम नमाज़ में अक़ीदा व इबादत के सिलसिले में यह इरशादे इलाही भी पढ़ते हो अनुवादः हालांकि उन्हें इसी का तो हुक्म हुआ था कि वह अल्लाह की इबादत करें उसके लिए इताअत को खालिस करते हुए और बिल्कुल यक्सू हो कर नमाज़ कायम करें और ज़कात दें और यही सही मिल्लत का दीन है। (अल बय्यिनः 5)

फस्लो क़ज़ा (न्याय) और सियासत के बाब में यह फरमाने इलाही भी पढ़ते हो अनुवादः पस नहीं, तुम्हारे रब की कसम, यह लोग मोमिन नही हो सकते, जब तक अपने मध्य उठने वाले झगड़े में तुम्हें *हकम* न मानें और जो कुछ *तुम* फैसला कर दो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न महसूस करें और बिल्कुल अपने आप को हवाले करे दें। (*अल–निसाः* 65)

कारोबार और दीन के सिलसिले में यह अहकाम भी पढ़ते हो, ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी निश्चित समय के लिए उधार का लेन देन करो तो उसको लिख लिया करो, और उसको तुम्हारे मध्य कोई न्याय के साथ लिखने वाला लिखे और जिसे लिखना आता हो वह लिखने से इन्कार न करे, बल्कि जिस तरह अल्लाह ने उसे सिखाया, उसी तरह वह दूसरों के लिए लिखने के काम आये और यह दस्तावेज लिखवाये वह जिस पर हक लागू होता है, और वह उस अल्लाह से डरे जो उसका रब है, और उसमें कोई कमी न करे, और अगर वह जिस पर हक लागू होता है, ना समझ या कमज़ोर हो, या लिखवा न सकता हो तो जो उसका गार्जियन हो, वह इन्साफ के साथ लिखवा दे और उस पर अपने लोगों में से दो मर्दों को गवाह बना लो, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें, इसलिए कि एक भूल जायेगी तो दूसरी याद दिला देगी, और गवाह जब बुलाये जायें तो आने से इन्कार न करें और छोटा हो या बड़ा उसकी मुद्दत तक के लिए उसको लिखने में सुस्ती न करो। यह हिदायात अल्लाह के नज़दीक ज़ियादा न्यायिक, गवाही को ज़ियादा ठीक रखने वाली और इस बात के ज़ियादा करीने कयास (करीब) हैं कि तुम शुब्हात में न पड़ो, हाँ अगर मुआमला नकद लेनदेन का हो, तो उस के न लिखने में कोई हरज़ नहीं और तुम कोई मुआमला खरीदो फरोख़्त का करो तो इस सूरत में गवाह बना लिया करो, और लिखने वाले या गवाह को सिकी प्रकार का कोई नुक्सान न पहुँचाया जाये।

(अल बकरः 282)

इसी प्रकार जंग व जिदाल के बाब में यह फरमाने इलाही पढ़ते हो अनुवादः और जब तुम उनके मध्य मौजूद हो और इमामत कर रहे हो तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह तुम्हारे साथ खड़ा हो, और वह अपने हथियार लिए हुए हो तो जब वह लोग सजदा कर चुकें तो वह तुम्हारे पीछे हो जायें और दूसरा गिरोह आगे आये, जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है, और वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, और यह भी अपनी

हिफाज़त का सामान और अपने अस्लहे लिए हुए हों काफिर यह तमन्ना रखते हैं कि तुम अपने अस्लहे और अपने सामान से थोड़ा गाफिल हो तो वह तुम पर अचानक टूट पड़ें, और इस बात में तुम पर कोई गुनाह नहीं कि अगर तुम्हें बारिश की वजह से तक्लीफ़ हो या तुम बीमार हो तो अपने अस्लहे उतार दो अल्बत्ता अपनी हिफाजत का सामान लिए रहो इनके अलावा अंगिनत आयतें हैं जो सामूहिक आदाब और सामाजिक कामों के प्रति हिदायात देती हैं।

चूंकि इख़्वान हमेशा किताबे इलाही से ही सम्बद्ध रहे, इसी से राहयाब व कामयाब हुए, इसलिए उन्हें यकीन है कि उसी वसीअ़ और जामेअ़ (विस्तृत तथा व्यापक) तसव्वुरे दीन का नाम इस्लाम है, और अनिवार्य है कि वह ज़िन्दगी के समस्त कार्यों पर हावी रहे सारे कार्यों में उसी का ज़लवा हो, सब पर उसी का शासन हो, सब उसी के उसूलो तालीमात के ताबेअ़ (अधीन) हों, सब उसी से गिजा (खाद्य) हासिल करें, अगर उम्मत यह चाहती है कि वह सही मानों में इस्लाम पर रहे तो इसके बगैर चारा नहीं, लेकिन अगर वह इबादात में हो तो इस्लाम पर रहे और दूसरे मुआमलात में गैरे इस्लाम पर, तो जाहिर है कि उसका यह इस्लाम बिल्कुल खोटा है, और वह इस फरमाने इलाही के अनुकूल है अनुवादः क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से पर तो ईमान रखते हो, और एक हिस्से का इन्कार करते हो जो लोग तुममें से ऐसा करते हैं उनकी सजा दुन्या की ज़िन्दगी में रुसवाई के अलावा कुछ नहीं, और आखिरत में यह सख़्त तरीन अ़ज़ाब की तरफ भेजे जायेंगे, अल्लाह उस चीज़ से बेखबर नही है जो तुम कर रहे हो (अल बकराः 86)। हमारा यह अकीदा भी है कि इस्लाम की बुन्याद और दीन का सर चश्मा अल्लाह की किताब और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है, जिनको अगर उम्मत मजबूती से थामे रही तो वह कभी गुमराह नही हो सकती, बहुत से अफकारो उलूम जो इस्लाम से वाबस्ता हो गये हैं, और उसी के रंग में रंगे हुए हैं, इन अफकारो उलूम पर अपने अपने अदवार की भी छाप है, और उन कौमों से भी वह मुतअस्सिर हैं जिनके ज़माने की वह पैदावार हैं, इसलिए ज़रूरी है कि वह इस्लामी निज़ाम जिन पर उम्मत को ले चलना है वह इसी साफ़ व शफ्फाफ (स्वच्छ) चश्मे से लिए गये हों, हम इस्लाम को उसी तरह समझें जिस तरह हमारे सालेह अस्लाफ (नेक पुराने बुजुर्ग) समझते थे, हम उन्हीं इलाही खुतूत और नबवी हुदूद पर ठहर जायें, खुद को उन चीजों का पाबन्द न करें जिन का पाबन्द खुदा ने नही किया है, न अपने ज़माने पर कोई ऐसा रंग चढ़ायें, जो उसके लिए मुनासिब न हो, कि इस्लाम तो सारी इंसानियत का दीन है।

हमारा यह अकीदा भी है कि इस्लाम एक निहायत जामेअ़, कामिल और हमागीर (सम्पूर्ण तथा व्यापक) दीन

है जो जिन्दगी के सारे मुआमलात को संगठित करता है, सारी उम्मतों और सारी कौमों को सामने रखता है और सारे अदवार और मराहिल (चरणों) का साथ देता है, इसलिए वह इस ज़िन्दगी की अंशों से बहस नहीं करता, चेजाये कि खालिस दुन्यावी कामों से, कि यह चीजें उस का विषय बन ही नहीं सकतीं! वह तो सिर्फ बुन्यादी उसूल (मूल सिद्धांत) देता है, फिर अमली राह सुझा देता है कि मुआमलात को इन उसूलों पर अनुकूल किया जा सके, और उनकी रौशनी में यकीन के साथ सही फैसला किया जा सके या कम से कम गालिब गुमान हो सके।

इस्लाम ने इस्लाहे नफ़्स पर पूरा ध्यान दिया है कि यही निज़ामों का स्रोत, और तसव्वुरातो नज़रियात का मूल है, चुनांचि उसने ऐसी कारगर दवायें चुनीं हैं जो उसे ख़्वाहिशे नफ़्सानी से पाक करती, खुदगर्ज़ी व मफाद परस्ती से नजात देती, ज़ियादती, कोताही और सरकशी से बाज़ रखती और ऊँचाई व कमाल की तरफ उसकी रहनुमाई करती हैं और नफ़्स जब राह पर आ जाये, और उसके अन्दर पाकीज़गी व स्वच्छता पैदा हो जाये तो जो चीज़ भी उससे निकलेगी आकर्षक व रोचक होगी।

कहा जाता है कि न्याय, क़ानून के लेख में नहीं, जज की तबीअत (स्वभाव) में होता है, एक क़ानून जो न्याय पर निर्भर और हर ओर से संपूर्ण होता है, वह जब किसी ऐसे जज के हाथ में आता है जो स्वार्थी और मतलबी होता है, तो उसी क़ानून से न्याय की चांदी छटकना (रौशनी) की जगह जुल्मो ज़ियादती की चिंगारियां निकलने लगती हैं उसके विरुद्ध निहायत खोटा और जालिमाना क़ानून किसी ऐसे जज के हाथ में आता है जो उच्च स्वभाव, इंसाफ पसंद, और निःस्वार्थ होता है तो उसी क़ानून की शाखे खबीस से खैरो बरकत और न्याय व रहमत के फूल खिलने लगते हैं।

इसीलिए अल्लाह की किताब में मन की शुद्धि का बड़ा एहतिमाम (प्रबंध) है चुनांचि वह रूहें जो इस्लाम के सांचे में ढ़ल गयीं थीं, इन्सानी कमाल का नमूना थीं, उन्हीं कारणों से इस्लाम का मिज़ाज सारे ज़मानों और सारी क़ौमों के लिए अनुकूल है और वह हर एक की ज़रूरतों का कफील (पोषक) है उसके अलावा इस्लाम कभी किसी अच्छे निजाम और अच्छी चीजों के कुबूल करने से भागता नहीं है शर्त यह है कि वह उसके मूल उसूलों से न टकराये।

अज़ीज़ दोस्तो! मैं ज़ियादा विस्तार में नहीं जाऊँगा कि यह तो बहुत विस्तृत विषय है, इख़्वान के दिमागों में फिक्रे इस्लामी का जो विस्तृत और जामेअ़ तसव्वुर है उसकी वजाहत (स्पष्टता) के लिए तो इतनी बातें काफी हैं।

इख़्वानुल मुस्लिमीन की फिक्र तमाम इस्लाही गोशों की जामेअ़ है–

इख्वान के इस वसीअ़, जामेअ़, हमागीर तसव्वुरे इस्लाम का नतीजा यह हुआ कि उम्मत के अन्दर इस्लाह के जितने भी पहलू हैं उन

सब पर उनका फिक्र हावी हो गया, तमाम इस्लाही मकातिबे फिक्र के बेहतर अ़नासिर को उसने अपने अन्दर समेट लिया, और हर मुख़्लिस और गैरतमंद जन सेवी को उसमें अपनी तमन्नाओं की तस्वीरें नज़र आने लगीं, जिन अच्छाई की इच्छुक रूहों ने उसे पहचान लिया, और उनके मकासिद और अरमानों को समझ लिया, उनकी उम्मीदों का वह केन्द्र बन गया चुनांचि बेतकल्लुफ कहना सही है कि तहरीके इख़्वान–

1). एक सलफी दावत है क्योंकि वह इस्लाम को उसके खालिस सूत्रों, किताबो सुन्नत की तरफ लौटाने की दावत देती है।

2). यह कहना भी सही है कि वह एक "सुन्नी मस्लक़" है, क्योंकि वह सारी चीजों खासकर अक़ाइद व इबादात में सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर गामज़न (चल रही) है।

3). यह कहना भी सही है कि वह "तसव्वुफ का एक हल्क़ा" है, क्योंकि वह खैर की बुन्याद, दिल की पाकीज़गी, अमल पर बराबर लगे रहना, मख़्लूक़ का माफ करना, अल्लाह के लिए महब्बत और नेकी के लिए यगानगत (स्वजनता) को समझती है।

4). यह कहना भी सही है कि वह एक "सियासी तन्ज़ीम" है क्योंकि उसका मुतालबा है कि हुकूमत की इस्लाह की जाये, उसकी विदेशी पालीसी में संशोधन किया जाये, अवाम के अन्दर इज़्ज़त व खुद्दारी की रूह फूंकी जाये और अंतिम छोर तक उनकी कौमियत की हिफाजत की जाये।

4). यह कहना भी सही है कि वह एक "वर्जिशी टीम" है क्योंकि वह स्वास्थ्य का ख़्याल रखती है उसका अकीदा है कि ताकतवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर है, नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि "तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़्क़ है" क्योंकि इस्लाम के तमाम फ़राइज़ सही सही अदा नही हो सकते जब तक जिस्म मजबूत व ताक़तवर न हो, नमाज़, रोज़ा, जकात, हज के लिए आवश्यक है कि एक ऐसा जिस्म हो जो रोज़ी की तलाश में, कोशिश करने और रोज़ी कमाने की तक्लीफें बर्दाश्त करने की हिम्मत रखता हो, यही कारण है कि वह अपनी वर्जिशी टीमों के लिए बहुत एहतिमाम करते हैं कि बसा औक़ात वह टीमें भी वह काम नही कर पातीं जो खास इसी कार्य के लिए गठित होती हैं।

6). यह कहना भी सही है कि "वह एक इल्मी और सक़ाफती इदारा" है यह इख़्वानी कमेटियाँ हक़ीक़त में इल्मो सक़ाफत की पढ़ने पढ़ाने की जगहें और जिसमो रूह़ की तर्बियत गाहें हैं, क्योंकि इस्लाम में इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर अनिवार्य है।

7). यह कहना भी सही है कि वह एक "तिजारती कम्पनी" है क्योंकि इस्लाम सही तरीक़े से माल कमाने की तर्गीब (उभारना) देता है, नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि "अच्छे आदमी के पास अच्छा माल क्या ही बेहतर चीज़ है"

शेष पृष्ठ.....35

ज़िक्रे महबूबाने ख़ुदा

हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा अल्लाह के प्यारे नबी
रहमतें लाखों हों उन पर, रब के वह प्यारे नबी

हैं चचा अब्बास उनके और हैं हमज़ा शहीद
रहमतें यारब तेरी हर वक़्त हों उन पर मज़ीद

तेरह हैं अज़वाज उनकी उम्मुहातुल मोमिनीं
शक नहीं इसमें कि उनसे राज़ी रब्बुल आलमीं

क़ासिमो ताहिर व तय्यिब और इबराहीम भी
हैं यह औलादे नबी और सबके सब हैं जन्नती

ज़ैनब, रुक़य्या, फ़ातिमा और उम्मे कुलसूमे नबी
चारों नबी की बेटियाँ थीं, सब नबी की लाडली

हैं उमामा बिन्ते ज़ैनब और हुसैन इब्ने अली
थे बहुत ही चाहते इन दोनों को प्यारे नबी

चार राशिद हैं ख़लीफ़ा जो बहुत मशहूर हैं
बुबक्र, उमर, उसमां, अली वह सबके सब मग़फ़ूर हैं

पाँचवें राशिद ख़लीफ़ा हैं हसन भी लाजरम
हैं नवासे वह नबी के और हमारे मुहतरम

या ख़ुदा प्यारे नबी पर तेरे हों लाख़ों सलाम
और सब असहाब पर भी रहमतें उतरें मुदाम

ताईद व नुसरते इलाही का मेआ़र

(अल्लाह की सहायता तथा उसकी कृपा का मापदण्ड)

—अल्लामा यूसुफ करजावी—
—अनुवादः इरशादुर्रहमान
—हिन्दी लिपिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्रश्नः हम कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का यह इरशाद पढ़ते हैं।

अनुवादः और हम पर यह हक था कि हम मोमिनों की मदद करें (अलरूम 30/47) जब कि ज़मीनी सूरते हाल में मोमिनो को अपमानित और परेशानियों से पीड़ित पाते हैं, उसके साथ अल्लाह तआला का यह इरशाद भी पढ़ते हैं।

अनुवादः इज्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मोमिनीन के लिए है (मुनाफिकून 63/8), लेकिन मोमिन रुस्वाई और गुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं कुर्आन मजीद कहता है अनुवादः और अल्लाह ने काफिरों के लिए मुसलमानों पर गालिब आने की हरगिज़ कोई सबील नही रखी है (अल निसा 4/141) मगर हम अपने आस पास देखते हैं तो काफिरों को मोमिनों पर हजार संदर्भों से हावी पाते हैं इसी प्रकार और आयात भी हैं, मसलन, अनुवादः यकीनन अल्लाह मुदाफ़अ़त (बचाव) करता है उन लोगों की तरफ से जो ईमान लाये हैं (अल हज 22/38)। अनुवादः यह इसलिए कि ईमान लाने वालों का हामी व मददगार अल्लाह है (मुहम्मद 47/11) अनुवादः अल्लाह मोमिनों के साथ है (अल अनफाल 8/19), इसके बावजूद सूरते हाल यह है कि क़ियादत व सियादत और सर बुलन्दी (सम्मान) काफिरों और मुलहिदों (अधर्मियों) को हासिल है, जब कि क़मजोरी व पिछड़ापन और ज़िल्लत व रुसवाई मोमिनों के हिस्से में आई है, उसकी क्या तौज़ीह हो सकती है और क्या सबब बयान किया जा सकता है?

उत्तरः आयात तो बहुत ही साफ हैं आप इज़्ज़तो नुसरत और ताकत व सियादत (सरदारी) और अल्लाह की कृपा की तमाम आयात को मोमिनों से जोड़ सकते हैं, लेकिन ईमान के हर दावेदार और मुसलमानों जैसे नाम रख लेने वालों से मुतअल्लिक़ क़रार नहीं दे सकते, क्योंकि एतिबार और अहमीयत नामों की नहीं होती बल्कि उन चीज़ों की होती है जिनके यह नाम होते हैं।

अगर ईमान से मुराद अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने का ज़बानी इक़रार लिया जाये और इस्लाम के बाज शआ़यर को क़ाइम रखने की हद तक समझा जाये तो हम मोमिन हैं, और अगर ईमान उन खूबियों के हासिल करने का नाम है जिनको कुर्आन मजीद ने मोमिनीन के लिए बयान किया है तो हमारे और कुर्आन के बयान किये हुए ईमान के मध्य कई और मराहिल (चरण) भी आते हैं, वह मोमिन जिनकी मदद व ताईद का ज़िम्मा कुर्आन मजीद की

आयत के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला लेता है, उन मोमिनों की कुछ सिफात हैं जिन्हें खुद कुर्आन मजीद ने ही बयान कर दिया है, उन सिफात के जरिए उन मोमिनों के ऐसे अक़ाइद, आमाल और अख़्लाक़ को वाजेह कर दिया गया है जिन की बिना पर मोमिन अल्लाह तआला की तरफ से तकरीमो तौक़ीर (सम्मान) के मुस्तहिक करार पाते हैं, यह इन्साफ नही कि हम मोमिन के लिए कुर्आन मजीद में बयान किये गये अल्लाह तआ़ला के वादों का तो ज़िक्र करें मगर मोमिनों की तारीफ और वजाहत के लिए कुर्आन के बजाये कहीं और रुजुअ़ करें।

हमें कुर्आन मजीद की यह रौशन आयात भी पढ़नी चाहिए। अनुवाद : सच्चे ईमान वाले तो वह लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र सुन कर लरज़ (कांप) जाते हैं और जब अल्लाह की आयात उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है, और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं, जो नमाज़ काइम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (हमारी राह में) खर्च करते हैं, ऐसे ही लोग हक़ीकी मोमिन हैं (अल अन्फाल 8/2,3,4)। अनुवादः यक़ीनन कामयाबी पाई है ईमान लाने वालों ने जो अपनी नमाज़ में खुशूअ़ इख़्तियार करते हैं (अलमोमिनून 23/1,2) अनुवादः मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, यह सब एक दूसरे के दोस्त हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं (अल तौबा 9/71) अनुवादः मोमिन तो एक दूसरे के भाई हैं इसलिए अपने भाइयों के मध्य तअल्लुकात को दुरुस्त करो (अल हुजरात 49/10) अनुवादः हक़ीक़त में तो मोमिन वह हैं जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लायें फिर उन्होंने कोई शक न किया और अपनी जानों और मालों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही सच्चे लोग हैं (अल हुजरात 49/15) अनुवादः ईमान लाने वालों का काम तो यह है कि जब वह अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ बुलायें जायें ताकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके मुक़दमें का फैसला करें तो कहें कि हमने सुना और इताअ़त की, ऐसे ही लोग फलाह पाने वाले हैं (अल नूर 24/51) यह आयत और ऐसी दूसरी बहुत सी आयात भी पढ़नी चाहिए जो कुर्आन मजीद में ही हैं, फिर हमें अरबों मुसलमानों को देखना चाहिए जो खुद को इस्लाम के साथ मन्सूब करते हैं, ऐसी सूरते हाल में अपने रब की क़सम खा कर कहिए कि क्या मुसलमान ऐसी क़ौम नही बन गये जिन्होंने नमाज़ को बेकार कर दिया है, ख़्वाहिशात के पीछे दौड़ रहे हैं, उनके दिल अल्लाह तआ़ला की याद से गाफिल हैं, अल्लाह से उनका तअ़ल्लुक कट चुका है, गोया कुर्आन ही की ज़बान में, अनुवादः यह आपस की मुखालिफत में बड़े सख़्त हैं तुम उन्हें इकट्ठा समझते हो मगर उनके दिल एक दूसरे से फटे हुए हैं (अल–हश्र

59/14) बुराई उनमें आम और खुल्लम खुल्ला हो गयी है, जब कि नेकी दब कर रह गयी है, बल्कि यह कहना चाहिए कि नेकी बुराई बन गयी है और बुराई ने नेकी की जगह ले ली है, यहाँ अब नेकी का प्रचार करने वालों की जगह बुराई का प्रचार करने वाले आ गये हैं बल्कि नेकी को रोकने वाले मौजूद हैं।

आप उन अरबों अहले ईमान को देखें तो आप को मालूम होगा कि उन में से लाखों को गिरोही पक्षपात और साम्प्रदायिक गुमराहियों ने तबाह करके रख दिया है और लाखों को सियासी अन्याय ने बेकार बना दिया है, लाखों को अजनबी फिक्री हमलों ने एतिक़ादी तौर पर कमज़ोर कर दिया है, लाखों को सेकुलर इस्तेमार (उपनिवेशवाद) ने अलगाव पसंद बना दिया है इसी प्रकार लाखों को ईसाई इस्तेमार ने जिहालत में धकेल दिया है और लाखों ऐसे हैं जो किसी गिनती में ही नहीं, वह गफ़्लत में बे सुध और मदहोशी में बेहिस पड़े हैं, अनुवादः मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा, और उनको कुछ मालूम नही है कि उन्हें कब (दोबारा ज़िन्दा करके) उठाया जायेगा।

(अल–नहल 16/21)

प्रश्न यह है कि हम यहूदियों के मुकाबले में भी मुख्लिस मोमिन नहीं? यहूदी क्यों गालिब हैं, और गालिब भी हमारे ऊपर हैं? अर्ज है कि यहूदी कायनात में अल्लाह तआला के क़वानीने कुदरत को महत्व देने की बिना पर गालिब आये हैं, कवानीने कुदरत को महत्व देना ईमान का एक अंश है, हमने इस अंश को बेकार कर दिया, लेकिन उन्होंने उसकी हिफ़ाजत की है, दर अस्ल वह जगते रहे, जब कि हम नींद के मज़े लेते रहे, उन्होंने इल्म हासिल किया, जब कि हम जिहालत में पड़े रहे, उन्होंने मेहनत को शिआर (आचरण) बनाया, जब कि हमने सुस्ती व पिछड़े पन को गले लगाया, उन्होंने अपनी आपसी ताक़त को एक दूसरे के मदद के जरिये बढ़ाया, जब कि हम आपसी लड़ाई झगड़ों में कमज़ोर होते रहे, उन्होंने कल के लिए तैयारी की, जब की हम तो अपना आज का काम भी फरामोश किये रहे, उस कौम ने अपना खून पसीना बहा डाला जब कि हमने आंसू बहाने के अलावा कुछ न किया।

विकास और पतन विजय और पराजय के इलाही क़वानीन किसी पर जुल्म नहीं करते और न बेजा किसी की हिमायत में आते हैं, जो भी नुसरत के असबाब को इख़्तियार और इस्तेमाल करेगा वह कामयाबी से हम किनार होगा चाहे वह यहूदी ही हो, जो पराजय की तरफ चल पड़ेगा वह उससे दोचार हो कर रहे गा चाहे वह इस्लाम ही के साथ मन्सूब हो, उहद की लड़ाई में मुसलमानों के साथ पेश आने वाले हादसे पर नज़र डालिए! इस लड़ाई में मुसलमानों ने एक गलती की तो 70 शुहादा की सूरत में उसकी कीमत अदा की, जिनमें रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा रज़ि0, हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0, सअ़द बिन रबीअ़

रज़ि0 और अनस बिन नज़र रज़ि0 जैसे जवां मर्द मोमिन शामिल थे, इस मौक़े पर यह बात भी मुसलमानों के काम न आई कि उनके क़ाइद व रहबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और दुश्मनों की कतार में बुतों के पुजारी हैं कुर्आन मजीद ने इस सूरते हाल को यूं महफ़ूज़ किया है और कुर्आन से बढ़ कर न्याय पर आधारित फैसला और बयान किस का हो सकता है फरमाया अनुवादः और यह तुम्हारा क्या हाल है कि जब तुम पर मुसीबत आ पड़ी तो तुम कहने लगे यह कहां से आई? हालांकि (जंग बद्र में) उससे दो गुनी मुसीबत तुम्हारे हाथों (फरीके मुखालिफ) दूसरे पक्ष पर पड़ चुकी है, ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन से कहो, यह मुसीबत तुम्हारी अपनी लाई हुई है, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (आले इमरानः 3/165) इस मसअले को अधिक समझने के लिए कुर्आन मजीद की नीचे लिखी आयात भी पढ़ लीजिए अनुवादः ऐ लोगो! जो ईमान लाये हो, मुकाबले के लिए तैयार हो जाओ, फिर जैसा मौक़ा हो अलग–अलग दस्तों की शक्ल में निकलो या इकट्ठे हो कर (अल निसाः 4/71) अनुवादः और तुम लोग, जहाँ तुम्हारा बस चले, ज़ियादा से ज़ियादा ताकत और तैयार बंधे रहने वाले घोड़े उनके मुकाबले के लिए तैयार रखो ताकि उसके ज़रिए दुश्मानों को ख़ौफजदा कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते मगर अल्लाह जानता है (अल अन्फालः 8/60) अनुवादः ऐ लोगो! जो ईमान लाये हो, जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो साबित क़दम रहो, और अल्लाह को खूब खूब याद करो, उम्मीद है कि तुम्हें कामयाबी नसीब होगी, और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करो और आपस में झगड़ो नहीं, वरना तुम्हारे अन्दर कमजोरी पैदा हो जायेगी और तुम्हारी "हवा उखड़" जायेगी, सब्र से काम लो यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(अल अन्फाल 8/45,46)।

क्या हमने इन आयात पर अमल किया? हमने तो अपना दिफाअ (रक्षा) भी न किया बल्कि फरेब में ही मुब्तला (ग्रस्त) थे कि अचानक यहूदी चालों का शिकार हो गये और आज भी उनके चंगुल में फंसे हुए हैं हम हमेशा गफ़्लत में पड़े रहे और अपनी बिसात (ताकत) भर तैयारी न की, न ताक़त हासिल की, हाँ! बेकार हथियार खरीद लिया जो निशाने पर लगने के बजाए निशाना लेने वाले ही पर वापस आ लगता है, हथियार और साजो सामान से यही गफ़्लत भरी सूरते हाल थी, जिसकी बुन्याद पर दुश्मन ने अचानक हमारे ऊपर हमला कर दिया, कुर्आन मजीद ने इस हकीकत को भी बयान किया है अनुवांद : कुफ़्फार इस ताक में हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान की ओर से ज़रा ग़ाफ़िल हो तो वह तुम पर अचानक टूट पड़ें। (सर–ए–अल निसा 4/102)

यही वजह है कि जब हम दुश्मन के सामने आये तो उस प्रकार न ठहर सके

जिस प्रकार ठहरने का अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को हुक्म दिया था, न बहुत ज़ियादा अल्लाह तआला को याद ही किया, बल्कि थोड़ा भी न किया और न अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त की, हमने तो लश्कर साज़ी और मैदाने जंग से मुँह मोड़ कर नाच गानों की तरफ रुख कर लिया, हम इस आपसी लड़ाई झगड़ों से न रुके जिससे अल्लाह तआ़ला ने हमें मना किया था, नतीजा यह निकला कि हम नाकाम हुए और गुब्बारे से हवा निकल गई।

इस सूरते हाल के बाद कैसे हम अपने आप को मोमिनों के उस गिरोह में गिन सकते हैं जिस को कुर्आन मजीद ने बयान किया है, इसी प्रकार हम उन वादों के मुन्तज़िर भी कैसे हो सकते हैं जो अल्लाह ने किये हैं? जब कि हम उन शर्तों को पूरा नहीं कर रहे हैं जो अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर की हैं, यह तो बड़ी बेशर्मी की बात है कि हम अल्लाह तआ़ला की नुस्रत के तो तालिब हों मगर खुद अल्लाह तआ़ला की मदद के लिए कुछ न करें, अल्लाह से हम मोमिनों जैसा बदला चाहें मगर अपने अन्दर मोमिनों जैसे सिफात पैदा न करें, हमारे ऊपर फर्ज है कि हम अल्लाह के लिए मुख़्लिस हो जायें, फिर अल्लाह भी हमारे साथ मुख़्लिसों जैसा सुलूक करेगा, मेरा मक़सद यह है कि हम हकीकी मोमिन बन जायें, अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के तरीक़े जिन्दगी होने पर, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़तदा व पेशवा होने पर, और कुर्आन मजीद के रहनुमा होने पर दिल की गहराईयों से राज़ी हो जायें, उसके साथ यह भी हमारा फर्ज है कि हम अपने अक़ाइद व अफकार, अख़्लाक़ो किरदार और निजामे ज़िन्दगी, अतः हर चीज़ में गैरुल्लाह की बन्दगी से बेज़ारी का इज़हार करें।

सिर्फ और सिर्फ इसी ईमान की बुन्याद पर हम उस खुशी व राहत और इज्जतो नुस्रत को हासिल कर सकते हैं जिसे अल्लाह तआला ने दुन्या में मोमिनों के लिए मुकद्दर फरमा दिया है, जब कि आखिरत की रजा व खुशी और अज्र व सवाब इसके अलावा है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या सालेह मोमिन कहीं भी मौजूद नहीं है? गुजारिश यह है कि यह उम्मत तो गुमराही पर इकट्ठी नहीं हो सकती, मगर ऐसे सालेह मोमिन बहुत थोड़े हैं और वह थोड़े होने के साथ उन बिखरे हुए दानों की तरह फैले हैं जो किसी धागे में गुथे न हों और उनमें से एक बड़ी तादाद को तो इसी मायूसी ने घेर रखा है कि इस्लाह और तबदीली मुम्किन नही, इसलिए उन्होंने हथियार डाल दिये हैं और मैदान मुन्किरे खुदा, फाजिर और चालबाज़ फिक्री हमले के लिए खुला छोड़ दिया है, उन सालेह मोमिनों में से कुछ तो रोने धोने और भूतकाल की ओर पलटने को काफी

समझ बैठे हैं और कोई संजीदा व मुसबत (सकारात्मक) कार्य योजना पेश नही करते और कुछ अल्लाह की राह में पहुंचने वाली तकलीफ से ही खौफ ज़दा हो कर कमज़ोर व बेकार हो गये हैं, इसी प्रकार के दर्जनों और कारण भी हैं जो ऐसे मोमिनों की मौजूदा दशा को वाजेह (स्पष्ट) करते हैं।

इन तमाम सूरते हाल में मसाइल का हल क्या हो कसता है? हल यह है कि अह्ले ईमान एक दूसरे को सही इस्लाम की ओर लौटने की दावत दें कि अकीदऐ शरीअ़त और अख़्लाक़ो किरदार में वह सही इस्लाम को इख़्तियार करें, वह कौम को भी उसी याद दिहानी (कोई भूली हुई बात याद दिलाना) के माध्यम से उम्मीदे, वईदें सुनायें, वह सिर्फ इस्लाम ही के जरिए से ग़ालिब आ सकते हैं और कियादत कर सकते हैं उनकी इकाई और ताकत इसी इस्लाम में छिपा है और दुन्या की इज़्ज़त और आखिरत की सआदत उसी इस्लाम में है, कहीं और नही। यह सालेह मोमिन उम्मत को पुराने जुमूद (रुकावट) नये इन्तिशार और कभी कभी खुल कर और कभी छुप कर हमला करने वाले कुफ्र से बचाने के लिए अपनी कोशिशों को यक्ज़ा करें, उन गैरत मंद मोमिनों की अपने जमाने के हालात का बखूबी इल्म होना चाहिए, ज़माने की ज़रूरतों से आगाह होना चाहिए, अपने अपने समाजों और मुल्कों के अहवाल से बा खबर होना चाहिए ,अजनबी हमलों और मुश्किलात से भी चौकन्ना होना चाहिए, और उनसे निपटने का सामान भी करना चाहिए, उन्हें यह काम माहिर उलमा की तरह करना चाहिए, मुकल्लिदों और नक्कालों की तरह नहीं, इसके साथ वह इस सरकश (विद्रोही) भौतिक हमलों का मुक़ाबला करने के लिए सब्र व यक़ीन के हथियार से लैस (तैयार) हों जिन हमलों ने इनके घरों को तबाह कर डाला है और उनके दिलो दिमाग़ को फेल करके रख दिया है, इस सूरते हाल को एक बड़े इस्लामी स्कालर ने एक जुमले (वाक्य) में बयान किया हैं इरतिदार (धर्म से फिर जाना) बढ़ रहा है मगर उसके खातमे के लिए अबू बक्र नहीं हैं।

जब मोमिन हक व बातिल के मध्य गर्म हो चुके, जंग में सब्र का मुजाहिरा कर लेंगे, और उन्हें अपने बारे में अल्लाह की आयात की सदाक़त (सच्चाई) का यकीन हो चुकेगा और वह अल्लाह, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और जिहाद को हर उस चीज़ पर तरजीह़ दे चुके होंगे जिसकी ख़्वाहिश और तमन्ना इंसानों को हर दौर में रही है, जब वह ऐसी बहादुरी और साबित कदमी का मुजाहिरा कर लेंगे तो वह खुद को इसका हकदार बना लेंगे कि अल्लाह उनको दुन्या की इमामत व कियादत अता फरमा दे, ज़मीन का वारिस बना दे और ज़मीन की हुक्मरानी व सल्तनत उनके पास आ जाये, जैसे कि अल्लाह तआला ने

फरमाया है अनुवादः और जब उन्होंने सब्र किया और हमारीआयात पर यक़ीन लाते रहे तो उनके अन्दर हमने ऐसे पेशवा पैदा कियेजो हुक्म से रहनुमाई करते थे।

(अल–सजदा 32/24)

लेकिन अगर यह सालेह मोमिन इस फर्ज को पूरा करने से पहलू बचायेंगे तो इसका अंजाम क्या होगा? यह अंजाम तो बड़ा खौफ़नाक और दिल दहलाने वाला है, कुर्आन मजीद की एक आयत ने उसकी निशानियों को मुतअय्यन करके और एक दूसरी आयत ने उसे मुतअय्यन किये बगैर बयान किया है पहली आयत यह है, अनुवादः तुम न उठोगे तो खुदा तुम्हें दर्दनाक सज़ा देगा, और तुम्हारी जगह किसी और गिरोह को उठायेगा, और तुम खुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है, (सूरः तौबा 9/39)। दूसरी आयत में यह है अनुवादः ऐ नबी कह दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवीयाँ, और तुम्हारे अज़ीज़ो अक़ारिब और वह माल जो तुमने कमाये हैं, और तुम्हारे वह कारोबार जिनके मांद (कमज़ोर) पड़ जाने का तुम को ख़ौफ़ है, और तुम्हारे वह घर जो तुम को पसंद हैं, तुम को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उसकी राह में जिहाद से अज़ीज़तर (महबूब) हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला तुम्हारे सामने ले आये, और अल्लाह फासिक लोगों की रहनुमाई नहीं करता है।

(सूर–ए–तौबा 9/24)

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

इद्दत उस से निकाह करुँगा या इशारतन अपने मतलब को उसे सुना दे ताकि कोई दूसरा उससे पहले पयाम न दे बैठे, मसलन औरत को सुना दे कि तुझ को हर कोई अज़ीज रखेगा या कहे कि मेरा इरादा कहीं निकाह करने का है तो कुछ गुनाह नही मगर साफ पयाम कदापि न दे।

4. यानी हक़ तआला तुम्हारे जी की बातें जानता है सो नाजायज़ इरादे से बचते रहो और नाजायज़ इरादा हो गया तो उससे तौबा करो, अल्लाह बख़्शने वाला है और गुनहगार पर अज़ाब न हुआ तो इससे मुतमइन न हो जाए क्योंकि वह बुर्दबार है सजा देने में जल्दी नहीं फरमाता।

5. अगर निकाह के समय महर का ज़िक्र न आया और बिना महर ही निकाह कर लिया तो भी निकाह दुरुस्त है महर बाद में मुकर्रर हो जायेगा लेकिन इस सूरत में अगर हाथ लगाने से पहले यानी हम बिस्तरी और खलवते सहीहा से पहले ही तलाक़ दे दी तो महर कुछ लाज़िम (ज़रूरी) न होगा लेकिन शौहर को लाज़िम है कि अपने पास से औरत को कुछ दे दे कम से कम यही कि तीन कपड़े, कुर्ता, दुपट्टा, चादर, अपनी हालत के मुवाफिक और खुशी से देदे।

❖❖❖

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्जे हाल ब जनाब सरवरे कायनात अलैहि अफ़ज़लुस्सलवात व अक्मलुत्तहीयात ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन हाली की रूह-रौज़-ए-अनवर पर सलाम के बाद

ऐ ख़ास–ए–ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है
उम्मत पे तेरी आके अ़जब वक़्त पड़ा है

जो दीन बड़ी शान से निकला था वतन से
परदेस में वह आज ग़रीबुल ग़ुरबा है

वह दीन, हुई बज़्मे जहाँ जिससे चिरागाँ
अब उसकी मजालिस में न बत्ती न दिया है

जो तफ़रिक़े अक़्वाम के आया था मिटाने
उस दीन में खुद तफ़रिक़ा अब आके पड़ा है

जिस दीन ने, थे ग़ैरों के दिल आके मिलाए
उस दीन में खुद भाई से अब भाई जुदा है

जो दीन कि हमदर्दे बनी नौअ़े बशर था
अब जँग व जदल चार तरफ़ उसमें बपा है

गो क़ौम में तेरी नहीं अब कोई बड़ाई
पर नाम तेरी क़ौम का याँ अब भी बड़ा है

डर है कहीं यह नाम भी मिट जाए न आख़िर
मुद्दत से उसे दौरे ज़मां मेट रहा है

जिस क़स्र का था सर बफ़लक गुंबदे इक़्बाल
इदबार की अब गूँज रही उसमें सदा है

बेड़ा था न जो बादे मुख़ालिफ़ से ख़बरदार
जो चलती है अब चलती ख़िलाफ़ उसके हवा है

फ़रयाद है ऐ कशतिये उम्मत के निगहबाँ
बेड़ा यह तबाही के क़रीब आन लगा है

ऐ चश्म–ए–रहमत बि अबी अन्त व उम्मी
दुन्या पे तेरा लुत्फ़ सदा आ़म रहा है

कर ह़क़ से दुआ़ उम्मते मरहूमा के ह़क़ में
ख़तरों में बहुत जिसका जहाज़ आके घिरा है

उम्मत में तेरी नेक भी हैं बद भी हैं लेकिन
दिलदादा तेरा एक से एक उनमें सिवा है

ईमाँ जिसे कहते हैं अ़क़ीदे में हमारे
वह तेरी महब्बत तेरी इज़्ज़त की विला है

हम नेक हैं या बद हैं पर आख़िर हैं तुम्हारे
निस्बत बहुत अच्छी है अगर ह़ाल बुरा है

गर बद हैं तो ह़क़ अपना है कुछ और ज़ियादा
अख़बार में अत्तालिहु ली हमने सुना है

तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई
हाँ एक दुआ़ तेरी कि मक़बूले ख़ुदा है

गरदीन का जोखूं नहीं ज़िल्लत से हमारी
उम्मत तेरी हर हाल में राज़ी ब रज़ा है

हाँ हालीये गुस्ताख न बढ़ ह़दे अदब से
बातों से टपकता तेरी अब साफ़ गिला है

❖❖❖

इख़्लास और उसके बरकात व फायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

इख़्लास से वास्तविक जीवन और बका (स्थिरता) हासिल होती है-

जब इख़्लास होता है तो आदमी में वास्तविक ज़िन्दगी पैदा हो जाती है इसलिए जब आदमी अल्लाह के लिए कार्य करता है तो फिर नतीजा नहीं देखता, हमारा काम है करना कोई माने या न माने, परणिाम निकले या न निकले, कोई स्वीकार करे या न करे, हमारे रास्ते पे चले या न चले, हमारा काम था समझाना हमने समझा दिया, वह माने या न माने, और अगर इख्लास नहीं तो कहते हैं हमने बहुत समझाया उन्होंने नही माना, अब हम यह काम नहीं करेंगे, इसी लिए आदमी काम छोड़ देता है क्योंकि इख्लास में कमी है, हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ रह0 को देख कर हैरत होती थी कि बेहद कमज़ोरी की हालत में जब फालिज का भी असर हो गया था लेकिन हाल यह था कि कई निकाह पढ़ाये जब कि बोलना मुश्किल था लेकिन जब निकाह पढ़ाते तो पूरी बात कहते, सिहत और बीमारी दोनों में यही मामूल था कि बात पूरी कहते थे शायद किसी के दिल में बात उतर जाये, लोग ज़ियादा हों या कम बात इसी प्रकार फरमाते थे क्योंकि मक़सद इस्लाह होता था।

हज़रत मौलाना शाह इस्माईल शहीद रह0 का वाकिआ लिखा है कि एक बार जामे मस्जिद में खिताब फरमाया और बड़ी भीड़ थी (मौलाना की तकरीर में बड़ी भीड़ होती थी) जब तकरीर खत्म कर चुके तो देखा कि एक आदमी दौड़ा चला आ रहा है और आ कर रोने लगा कि हज़रत मैं तीस, चालीस किलो मीटर से आ रहा हूँ कि मैं मौलाना की तकरीर सुनूंगा यह कह कर रोने लगा, हज़रत का वअ़ज खत्म हो गया अब मैं क्या करूं, मौलाना ने कहा ठहर जाओ मैं अकेले तुम्हारे सामने वअ़ज कहूंगा उसको सामने बिठा कर पूरा वअ़ज दोहराया, यह सबसे मुश्किल काम है, लेकिन इख्लास वालों का मामला यही होता है।

हमने अपने हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 को देखा कितने ही थके हुए हों, कितने ही परेशान हों, कोई अल्लाह का बन्दा आ गया तो पूरी तवज्जोह के साथ बात करते थे, इख्लास की बात ही अलग है वरना ऐसा होता है कि दस दस साल से मदरसा चला रहे हैं, काम कर रहे हैं, कहते हैं किसी ने आज तक हम को माना ही नही, हमको किसी ने कुबूल किया ही नहीं, अगर अपने को कुबूल करवाने के लिए काम किया था, नहीं कुबूल हुआ, अल्लाह के लिए अगर काम किया जाय तो दस्यों साल आदमी मेहनत

करता रहे और चाहे कोई माने या न माने उसी प्रकार करता रहेगा, अल्लाह के यहां वह कामयाब है चाहे दुन्या में वह कामयाब न हो।

एक दफा अल्लाह के एक मुख्लिस बन्दे किसी को समझा रहे थे उसने गुस्से में धक्का दे दिया, वह नाली में जा गिरे, तब भी बुरा नहीं लगा, फिर समझाने लगे अल्लाह का जो बन्दा अल्लाह के लिए काम करता है तो वह किसी के कहने सुनने में और नतीजा देखने में नहीं पड़ता कि नतीजा सामने आ रहा है या नहीं, हाँ यह ज़रूर है कि जब अल्लाह तआला इख्लास पैदा फरमा देता है तो उसमें बरकत भी जाहिर होती है, उसके अन्दर तासीर पैदा हो जाती है, उसके कहने और समझाने को लोग बुरा नहीं मानते आमाल इख्लास से खाली हों तो चाहे देखने में बड़े मोटे ताज़े हों, लेकिन वह मिट्टी में मिल जायेंगे और इख्लास के साथ अमल चाहे मामूली हो उसकी मिसाल एक परिन्दे की है कि छोटा सा परिन्दा है, वह जिन्दा है, वह उड़ रहा है, उस की उड़ान बुलन्द है, इसलिए कि उसके अन्दर जिन्दगी है, ऐसे ही अगर हमारे आमाल इख़्लास के साथ जिन्दा हैं तो उनकी परवाज़ (उड़ान) बुलन्द है, अगर इख्लास के साथ हमारे आमाल नहीं हैं तो चाहे वह हाथी के बराबर हों तो एक दिन ऐसा होगा कि मिट्टी में मिल जायेंगे, इसलिए बहुत से ऐसे आमाल करने वाले भी रहे हैं कि वह बहुत ऊँचे और बड़े दर्जे के मालूम होते थे, लेकिन ऐसे गायब हुए कि उनका कोई नाम लेवा भी नहीं।

हज़रत मौलाना अली मियां रह0 फरमाते थे कि मुख्लिस की कशती (नाव) डूबते डूबते भी किनारे लग जाती है, और जो मुख्लिस नहीं होता उसकी नाव कनारे पहुंच कर भी डूब जाती है, इसलिए सबसे महत्वपूर्ण इख़्लास है, कि आदमी उसको हासिल करने का प्रयास करे।

इख्लास पैदा उसी समय होता है जब मुख्लिस के संग रहे, वरना अन्दर अन्दर वह बात पैदा होने लगती है जो उसको घुन की तरह खा जाती है, फख्र (गर्व) पैदा होने लगता है, अपने को बड़ा समझने लगता है, लेकिन जब वह बड़ों के साथ रहता है तो कहते हैं कि जब ऊँट पहाड़ के नीचे आता है तो उसको अपनी हैसियत मालूम होती है, और जब तक ऊँट पहाड़ के नीचे नहीं आता तो समझता है कि मुझ से बड़ा कोई नहीं, ऐसी ही जो लोग दीन का काम करने वाले हैं जब हर आदमी उनकी वाह वाह करता है, हज़रत की तकरीर ऐसी है, और आपने ऐसा काम किया, यह हो गया बस वह फूल जाता है, और जो अल्लाह वालों, और बड़े लोगों के पास रहता है तो यह समझता है कि यह लोग कितना काम किये हुए हैं, फिर भी अपने को कुछ नहीं समझते, न फख्र व गुरूर करते हैं न दूसरों की तहकीर, तो उसके अन्दर भी अल्लाह के लिए काम करने का जज़्बा पैदा हो जाता है।

हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ि0 फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो दुन्या से इख़्लास के साथ जाये और अल्लाह की इबादत इस तौर पर करे कि किसी को शरीक न करे, और नमाज़ पढ़ता हुआ जाये, ज़कात की अदायगी के साथ जाये तो अल्लाह उससे राज़ी होगा इससे बढ़ कर क्या बात होगी कि आदमी दुन्या से इस प्रकार रुख़्सत हो कि उसको अल्लाह तआला की रजामन्दी का परवाना (हुक्म नामा) मिल जाये, और यह उसी समय मिलेगा जब दो चीजें हासिल हो जायें वह चीजें बुन्यादी हैं, खालिस तौहीद और इख़्लास, यानी अल्लाह की ज़ात और सिफात में किसी को शरीक न करे यह तौहीद है, और उसकी इबादत और इताअत में भी किसी को शरीक न करे यह इख़्लास है, यह दो चीजें अगर हासिल हो जायेंगी तो उसकी कामयाबी में कोई शुब्हा ही नही, दुन्या की कोई ताक़त उसको नाकाम नहीं कर सकती, और अगर इसमें किसी दर्जे में कमी है तो पूर्ण कामयाबी नहीं हो सकती।

इख़्लास के बगैर कोई काम काबिले कबूल नहीं–

इख़्लास के बगैर कोई काम भी काबिले कबूल नहीं है, चाहे उसका तअल्लुक तालीमी सरगर्मियों (तन्मयता) से हो और चाहे उसका तअल्लुक तरबियती सरगर्मियों से हो, दोनों में इख़्लास शर्त है, इसी लिए हदीस में फरमाया गया है कि जो शख़्स वह इल्म हासिल करता है जिससे अल्लाह की रजा चाही जाती है (यानी दीनी उलूम) दीनी उलूम हासिल ही इसलिए किये जाते हैं कि अल्लाह राजी हो जाये, अल्लाह तआला के राजी होने को समझने के लिए दीनी उलूम का हुसूल किया जाता है गोया कि यह उलूम इसलिए है ताकि अल्लाह की रज़ा मालूम हो जाये, और रजा का क्या मतलब होता है? अल्लाह की पसन्द मालूम होती है रजा के माने पसन्द के हैं इसलिए जब किसी को कोई चीज़ देते हैं, और वह उसको पसन्द करता है, खुश होता है तो आप कहते हैं कि राज़ी हो? तो वह क्या कहता है कि राजी हैं इसी प्रकार पसन्द और ना पसन्द का मालूम होना बहुत मुश्किल है, जब तक कि पसन्द वाला यह न बता दे कि यह पसन्द है और यह ना पसन्द है, खाना लगा हुआ है, उम्दा उम्दा डिश लगी हुई है, केला, सेब, अंगूर, अनार, और जितने भी फल हो सकते हैं सब उसके दस्तरख्वान पर लगे हुए हैं आपके बग़ल में एक आदमी बैठा हुआ है, लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि इसको क्या पसन्द है जब तक कि वह खुद न बताये कि हम को क्या पसन्द है, पस बात यही है, अल्लाह जब तक हम को यह न बताये कि हमको यह पसन्द है, यह ना पसन्द है, इसमें यह मसअला नहीं है कि यह काम अच्छा है, यह भी काम अच्छा है, उनको पसन्द किया है, यह मालूम करना अनिवार्य है और अगर उनकी पसन्द के मुताबिक काम किया जाये तब तो वह राजी होंगे, वरना नाराज़ इसलिए अल्लाह तआला अम्बियाये किराम को भेजता है यह बताने के लिए

कि उसकी पसन्द क्या है और जब अल्लाह तआला ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा तो फिर कुर्आन मजीद में यह एलान कर दिया कि आज मैंने दीन को मुकम्मल कर दिया, निअ़मत को भी तमाम कर दिया, और इस्लाम से हम राज़ी हो गये।

यही इस्लाम जो मजहबे इस्लाम है, इससे हम राजी हैं, यह हमारी पसन्द का है, अब इसी पर चलना पड़ेगा, तो कोई कहे कि हम को यह पसन्द नहीं तो यह गलत हो जायेगा, इसलिए कि अल्लाह ने यह एलान कर दिया कि हमको यह पसन्द है और बता दिया, जब किसी बादशाह या वज़ीर या बड़े आदमी की आप दावत करें तो आप पुछवायेंगे कि आप को क्या पसन्द है, तब वह आयेगा आपके यहाँ, अगर आपने उलटी सीधी चीज़ें रख दीं तो उसको कुछ पसन्द ही नहीं आया, उसको जो चीज़ पसन्द थी वह रखनी चाहिए।

जब अमरीका का सदर आता है तो हिन्दुस्तान में पहले उनकी टीम आ जाती है कि उनको क्या क्या पसन्द है, क्या तैयारी होनी चाहिए? वह कैसे रहते हैं? क्या खाते हैं? उनके चारों तरफ कैसे लोग होने चाहिए? कितनी रियाअत उनकी पसन्द की की जाती है, तो अल्लाह जो सबसे बड़ा है तो क्या आप नहीं मालूम करेंगे कि उस को क्या पसन्द है, मालूम करना पड़ेगा, और कौन बतायेगा? नबी आ कर बताऐंगे कि उनको यह पसन्द है, अल्लाह तआ़ला की पसन्द को मालूम करके जब आप काम करेंगे तो अल्लाह तआ़ला खुश होगा वरना नहीं।

दीनी उलूम अल्लाह की पसन्द मालूम करने का ज़रिया हैं–

तालीम जो हमको सिखाई जा रही है कुर्आन की, हदीस की, और उसके ज़रिये से हम वह काम करें जिसको अल्लाह पसन्द करता है और फिर वह राज़ी हो जाता है, अब अगर कोई शख़्स यह तालीम इस लिए हासिल करता है कि इससे दुन्या मिल जायेगी तो जाहिर है कि यह कितनी बुरी बात है, लेकिन हम उसको दुन्या के लिए हासिल कर रहे हैं तो उसके लिए अल्लाह को गुस्सा भी आता है।

हदीस शरीफ में है कि जो दुन्या के साज़ो सामान के लिए इल्म हासिल करेगा तो उसको जन्नत की खुशबू तक न मिलेगी, यह इसलिए नहीं था कि तुम उसके जरिए से माल कमाओ, कुर्आन मजीद माल कमाने के लिए नहीं है, और यह हदीस के उलूम, फिक्ह के उलूम, यह माल कमाने के लिए नही हैं, जितने दीनी उलूम हैं यह अल्लाह को राजी करने के लिए हैं, अल्लाह की पसन्द मालूम करने के लिए है, जो इस भेद को समझ लेगा वह इन उलूम से फायदा उठायेगा, वरना नहीं, इसलिए साफ साफ हदीस में आता है, जन्न्त की वह शख़्स खुशबू भी नही पायेगा और जो पेशीनगोईयां (भविष्यवाणियाँ) हदीस में आती हैं कि आखिरी दौर में जो खराबियाँ पैदा हो जायेंगी उनमें से एक खराबी यह भी है, हदीस में आता है तिर्मिजी की रिवायत है कि इल्म हासिल किया

जायेगा दूसरे मकासिद के लिए, दीन के लिए नहीं जैसा कि आजकल हो रहा है कि दीनी उलूम भी हासिल किये जा रहे हैं दूसरे मकासिद के लिए, इसलिए इसमें बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है, अल्लाह तआला ने हम को यह उलूम इसलिए अता फरमाये कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हो जाये, उसकी पसन्द मालूम हो जाये।

.....जारी.....

❖❖❖

इख़्वानुल मुस्लिमून.....

इसी प्रकार दूसरी जगह फरमाया "जो काम करते करते शाम तक थक कर चूर हो गया तो उसने इस हाल में शाम की कि उसकी मगफिरत हो गयी" इसी प्रकार दूसरी जगह फरमाया "हुनर मन्द और पेशावर मोमिन को अल्लाह दोस्त रखता है"।

8). यह कहना भी सही है कि वह एक "समाज सेवी तन्ज़ीम" है क्योंकि वह समाजे इस्लामी की बीमारियों पर ध्यान देती, उनका इलाज खोजती और समाज को स्वस्थ्य रखने की कोशिश करती है। इस प्रकार तसव्वुरे इस्लाम की महानता ने हमारे फिक्र को तमाम इस्लाही पक्षों का जामेअ़ बना दिया, यह तमाम गोशे इख़्वानी सरगर्मियों के दायरे में आ गये, जब कि दूसरे लोग किसी एक पक्ष पर ही झुके होते हैं। हमारा कार्यकर्ता एक ही समय में इन सारे मैदानों की ओर मुतवज्जेह होता है कि इस्लाम तो इन तमाम पहलुओं का ही मुतालबा करता है इसीलिए लोगों को इख़्वान के यहाँ अंतर्विरोध नज़र आता है, हालांकि सही मानों में कोई तजाद (अंतर्विरोध) नहीं होता, लोग देखते हैं कि हमारा मुस्लिम भाई मेहराब के अन्दर खुशूअ़ व खुजूअ़ और आजिज़ी व नियाज़ मन्दी की तस्वीर बना रोने धोने में मसरूफ है, फिर वही भाई वअ़ज़ व तजकीर से दिलों को गर्मा रहा है, फिर वही एक माहिर खिलाड़ी की तरह गेंद को शाट लगा रहा है, दौड़ने की ट्रेनिंग कर रहा है, तैराक़ी में महारत पैदा कर रहा है और फिर वही मण्डियों या कारखाने में दियानत दारी (सत्यता) और इख़्लास के साथ अपनी डियूटी अंजाम दे रहा है, यह सारे काम लोगों को भिन्न और बेजोड़ मालूम हाते हैं, लेकिन अगर यह दिमाग़ में रहे कि इस्लाम इन तमाम ही चीज़ों का मुतालबा करता है, हव इन सब की ताकीद करता है, तो फिर उन्हें इनके अन्दर कोई अन्तर्विरोध न नज़र आये।

परन्तु सरगर्मियों के अन्दर जो कमज़ोर अंग हैं, या जो लोगों के आपत्ति और काना फूसियों के कारण बन सकते हैं उनसे इख़्वान पूर्णरूप से परहेज़ करते हैं।

वह नामों की पक्षपात से भी दूर भागते हैं क्योंकि इस्लाम के रिश्तए जामेअ़ ने उन्हें एक ही लक़ब–इख़्वानुल–मुस्लिमीन के गिर्द (आस पास) जमा कर दिया है।

यह मज़मून (लेख) शैख हसनुल बन्ना के मजमू–ए–रसाइल में मौजूद है एवं तौफीक़ अल–वाअ़ी की किताब "हसनुलबन्ना मुजद्दिदुल कर्न" में भी शामिल है यह तर्जुमा "मुजाहिद की अज़ान" से कुछ संशोधन के साथ लिया गया है। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक सरकारी मुलाज़िम ने Gratuty के फ़ार्म में अपनी बीवी का नाम लिखा अब उनका इन्तिक़ाल हो गया है उनके कई वरसा हैं क्या यह रक़म सिर्फ मरहूम की बीवी को मिलेगी या दूसरे वरसा भी इसमें हिस्सा पायेंगे?

उत्तरः वारिसीन (हिस्सा पाने वाले) में जब किसी का नाम ग्रेच्वेटी फार्म में दिखाया जाता है तो उसका मक़्सद सिर्फ रक़म उसूल करना होता है, नाम दिये गये को मालिक बनाना नहीं होता है, इस लिए उस ग्रेच्वेटी में मरहूम की बीवी के साथ दूसरे वरसा भी हिस्सा पाएंगे और हर एक को उसमें अपने हिस्से के बराबर रक़्म मिलेगी।

प्रश्नः एक शख़्स की बीवी ने महर मुआफ कर दिया था ज़िन्दगी में बीवी ने अपने शौहर से मुतालबा नहीं किया, लेकिन शौहर के इन्तिक़ाल के बाद छोड़े हुए माल में से पहले वह महर मांग रही है और उसे कर्ज़ में बताते हुए वरासत की तक्सीम पर प्रथम (मुकद्दम) समझते हैं, क्या उनका यह मुतालबा दुरुस्त है?

उत्तरः महर मुआफ़ करने से मुआफ हो जाता है, बीवी ने महर मुआफ कर देने के बाद शौहर से जब मुतालबा नहीं किया तो उनकी वफात के बाद महर के मुतालबे का हक़ नहीं होगा इसलिए यह मुतालबा गलत है और उसे दैन (क़र्ज़) नहीं माना जाएगा। (दुर्रुल मुख्तार अला रद्दुल मुहतार 150/3)

प्रश्नः कुछ लोग बीमा पॉलीसी चलाते हैं इसी तरह सरकारी मुलाज़िमीन को भी बीमा कराना पड़ता है, फार्म में अगर बीवी का नाम दिया जाय तो उस शख्स के इन्तिक़ाल के बाद उस पूरी रक़म का हक़दार क्या सिर्फ बीवी होगी या दूसरे वरसा भी उसमें हिस्सा पाएंगे?

उत्तरः बीमा की रक़म वसूल करने के लिए जब फार्म में बीवी का नाम दिया जाए तो उसे सिर्फ रक़म वसूल करने का हक़ होगा, वह शरअ़न कुल रक़म की मालिक नहीं होगी, बल्कि उसमें बीवी के साथ दूसरे वरसा हिस्सा पाएंगे याद रहे कि वरसा सिर्फ ज़रे अस्ल (मूलधन) के मालिक होंगे, ज़रे अस्ल के अलावा जो बढ़ी हुई रक़म मिलेगी वारिसीन पर वाजिब है कि सवाब की नियत के बिना उसे ज़रूरत मन्दों पर खर्च कर दें।

प्रश्नः सरकारी मुलाज़िमीन की वफ़ात के बाद उनकी बीवी को जो पेंशन मिलती है क्या उसमें दूसरे वरसा भी हक़दार होगें? या वह सिर्फ बीवी की होगी?

उत्तरः पेंशन हुकूमत की तरफ से एक मदद है जो मुलाज़िम की बीवी को मिलती है इसलिए उसमें वरासत जारी न होगी अर्थात उसमें दूसरे वारिस हिस्सा न पाएंगे।

प्रश्नः एक आदमी संगीन मरज़ में मुब्तला हो गया और उसी मरज में इन्तिक़ाल कर गया सरकार की तरफ से

मेडिकल इमदाद (सहायता) मिली थी, लेकिन वह रक़म मरहूम की वफात के बाद बीवी को मिली तो क्या यह रक़म बीवी की मिल्क होगी या माले मत्रूका मे समझी जाएगी? और तमाम वरसा में तक़्सीम की जाएगी?

उत्तरः मेडिकल इमदाद मरहूम के इलाज के लिए मिली थी वफात के बाद जब वह रक़म मिली तो माले मतरूक़ा में वह शामिल होगी और तमाम वरसा उसके अपने शरीई हिस्से के ब क़द्र हक़दार होंगे। (रद्दुल मुहतार 943/10)

प्रश्नः एक शख़्स ने अपने मरजुल मौत में अपना मकान अपनी बीवी के हक़ में वसीयत कर दी, अब उनका इन्तिक़ाल हो गया है मरहूम की बेवा वसीयत नामा दिखा रही हैं कि यह मकान मेरा है, मुझे शौहर ने दे दिया है, क्या शरीअत में यह मकान बीवी का होगा? या दूसरे वरसा भी इसमें हिस्सा पाएंगे?

उत्तरः बीवी वारिस है उनके हक़ में वसीयत नहीं होगी, हाँ अगर दूसरे वरसा उस वसीयत से राजी हों तो वसीयत नाफिज़ (लागू) हो जाएगी वरना नहीं। हदीस में यह हुक्म मौजूद है अनुवादः वारिस में वसीयत लागू न होगी सिवाय इसके कि दूसरे वरसा उसे मान लें। (बैहकी, दुर्रुल मुख़्तार अला रद्दुल मुहतार, किताबुल वसाया 346/6)

प्रश्नः ना फरमान (अवज्ञाकारी) औलाद को मीरास से महरूम करना कैसा है?

उत्तरः वालिदैन की नाफ़रमानी की वजह से कोई औलाद वरासत (बाप की छोड़ी हुई सम्मपत्तियों में हिस्सा पाने) से महरूम (वंचित) नहीं होगी क्यों कि वरासत एक इख़तियारी मिल्क नहीं है, बाप को यह हक़ नही कि अपने बाद वरसा में से किसी को वरासत से महरूम कर दे। शरीअ़त ने जो हिस्सा जिस वारिस का मुकर्रर कर दिया है वह उसको ज़रूर मिलेगा चाहे वारिस राजी हों या नाराज़, हज़रत अनस रज़ि0 की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अपने वारिस को मीरास से महरूम कर देगा, अल्लाह तआला कियामत के दिन उसे भी जन्नत की मीरास से महरूम कर देगा। (मिशकात पेज 266)

प्रश्नः एक मुसलमान खातून ने अपना निकाह घर वालों की मर्जी के खिलाफ़ एक गैर मुस्लिम से कर लिया, बाप ज़िन्दगी भर नाराज़ रहे और अपने घर आने नहीं दिया, वालिद का इन्तिक़ाल हो गया, उसने काफी जायदादें छोड़ी हैं, तमाम भाई बहनों ने जायदादें तक़्सीम कर ली हैं, लेकिन उस खातून को हिस्सा नहीं दिया जिसने गैर मुस्लिम से निकाह़ कर लिया है, क्या वह बाप की जायदाद में हिस्सा पाएगी?

उत्तरः किसी मुसलमान औरत का निकाह गैर मुस्लिम से जाइज़ नही है इसलिए निकाह ही नहीं हुआ, किसी मुस्लिम खातून का गैर मुस्लिम के साथ रहना संगीन गुनाह और आखिरी दर्जे की बेहयाई है उसे फौरन तौबा करके अपने घर आ जांना चाहिए, भाइयों और दूसरे अ़ज़ीज़ों की जिम्मेदारी है कि उसे फौरन उस बुरे माहौल से वापस ले आएं वरना अल्लाह के यहां सज़ा मिलेगी,

अगर उस खातून ने अपना मज़हब नहीं बदला है और वह अब तक मुसलमान है तो अपने वालिद मरहूम की जायदाद में हिस्सा पाएगी खुदा न करे अगर इस्लाम छोड़ बैठी है और मुरतद हो गई है तो वालिद मरहूम की मतरूका जायदाद में हिस्सा नहीं पाएगी क्योंकि इरतिदाद (इस्लाम से फिर जाने) से वारिस हिस्से से महरूम हो जाता है। मुरतद किसी का वारिस नहीं होता न मुसलमान का और न ही मुरतद का, इसी तरह मुरतद्दा (इस्लाम से फिर जाने वाली औरत) किसी की वारिस नहीं होगी, इसलिए कि मोरिस और वारिस की मिल्लत एक नहीं है। (शरी फिया 141)

प्रश्नः एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया है उनके वरसा में दो लड़के हैं, मरहूम ने एक ज़मीन तर्के में छोड़ी है वारिसीन में एक भाई चाहते हैं कि वह ज़मीन वालिद मरहूम के नाम से मस्जिद में दे दें, क्या कोई वारिस जो घर का ज़िम्मेदार हो वह ज़मीन मस्जिद में दे सकता है?

उत्तरः जो ज़मीन माले मतरूका में हो और वह वरसा के दरमियान मुशतरक हो तो तमाम वरसा की इजाज़त के बिना कोई मालिक उसे मस्जिद में नहीं दे सकता। "कोई वारिस दूसरे वारिस के हिस्से में उसकी इजाज़त के बिना तसर्रुफ (हस्तक्षेप) नहीं कर सकता"। (फतावा हिन्दीया 301/2)

प्रश्नः एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया है उसके वारिसीन मौजूद हैं, क्या कोई वारिस दूसरे वरसा की इजाज़त के बिना मरहूम के माले मतरूक़ा में से ईसाले सवाब के लिए फ़क़ीरों पर खर्च कर सकता है?

उत्तरः अगर माल मुशतरका हो, बंटा हुआ न हो तो तमाम वरसा की इजाज़त के बिना अकेला कोई वारिस तसर्रुफ नहीं कर सकता चाहे कारे ख़ैर ही क्यों न हो। (हवाला साबिक़)

प्रश्नः अगर कोई शख़्स माले हराम छोड़ कर दुन्या से रुख़्सत हुआ हो, तो क्या वारिसीन उस हराम माल को माले मतरूक़ा समझ कर आपस में तक्सीम कर सकते हैं या नहीं?

उत्तरः जो माल हराम हो वरिसीन उस के लेने के हक़दार नहीं अगर माले हराम के मालिक का इल्म हो तो अस्ल मालिक को लौटाना ज़रूरी है। अगर मालिक का इल्म न हो तो ज़रूरत मन्दों पर उस का सद्क़ा कर देना लाज़िम है। (दुर्रुल मुख़्तार अ़ला रद्दुल मुहतार 554/9)

प्रश्नः एक शख़्स ने अपने खास रिश्तेदार को अपना मकान ज़बानी व तहरीरी वसीयत कर दी और हुकूके मिल्क़ीयत अपने इन्तिक़ाल के बाद खिल दिया, अब वह शख़्स अपनी ज़िन्दगी ही में उस वसीयत को खत्म कराना चाहता है तो क्या वसीयत से रुजुअ का हक़ होगा?

उत्तरः इस्लामी शरअ़ में इस की गुंजाइश है कि अगर कोई वसीयत करने के बाद वसीयत से रुजुअ़ करे तो वसीयत खत्म हो जाएगी। (दुर्रुल मुख़्तार अ़ला रद्दुल मुहतार 350/किताबुल वसाया)।

प्रश्नः एक शख़्स के रूपये बैंक में जमा थे उसने यह तहरीर लिख दी कि मेरे इन्तिक़ाल के बाद यह रूपये मेरी बीवी के होंगे, उस शख़्स

पहले खुद को देखिए

—मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी —हिन्दीः मैमूना अशरफ

जो मनुष्य दूसरों की बुराइयाँ गाता रहता हो और अपनी बुराइयों की चिन्ता न करे वह सबसे ज़ियादा बर्बाद है इसके बजाय यदि वह अपना सुधार करले और अपने स्वभाव की समीक्षा करके अपने विकार दूर कर ले तो कम से कम समाज के एक व्यक्ति का सुधार हो जाएगा और अनुभव यह है कि समाज में एक दिया से दूसरा दिया जलता है इसी प्रकार एक व्यक्ति का सुधार दूसरे व्यक्ति के सुधार का कारण बन जाता है। समाज वास्तव में व्यक्ति जन समूह का नाम है तथा यदि हर व्यक्ति को अपने सुधार की चिन्ता हो जाये तो धीरे धीरे पूरा समाज सुधर सकता है।

अतः समस्या का समाधान इसमें नहीं है कि हम समाज की बुराइयाँ हर समय बयान करते रहें इससे न यह कि कोई लाभ दायक परिणाम नहीं निकलता अपितु प्रायः लोगों में निराशा फैलती है तथा दुष्कर्मों को बढ़ावा मिलता है उसके स्थान पर समस्या का समाधान कुर्आन व हदीस के प्रकाश में यह है कि हममें से हर व्यक्ति अपने हालात तथा कर्मों की समीक्षा करे और अपने आंतरिक में झाँक कर यह देखे कि उस पर अल्लाह और उसके बन्दों के क्या क्या अधिकार हैं और क्या वह वास्तव में उन अधिकारों को पूरा कर रहा है? तथा समाज की जिन बुराइयों की शिकायत वह बयान करता है उन में से कौन कौन सी बुराइयाँ स्वयं उसमें पाई जाती हैं?। ❑❑

का इन्तिक़ाल हो गया, मरहूम की माँ ज़िन्दा हैं क्या बैंक में जमा रूपयों में माँ हकदार होगी?

उत्तरः अगर उस शख़्स ने रूपये अपने नाम बैंक में जमा किये और बीवी के हक़ में यह लिख दिया है कि यह रूपये बीवी को मिलें तो यह बीवी की रकम नहीं होगी बल्कि माले मतरूक़ा में शामिल होगी, और औलाद न होने की सूरत में बीवी एक चौथाई और माँ एक तिहाई की हक़दार होगी। (फतावा हिन्दीया किताबुल फराइज़ 449/6)। अ़सबा न होने पर बाकी रूपये माँ को मिलेंगे।

कुछ शब्दों के अर्थ

अ़सबा= बाप के करीबी अ़जीज जो तरका तक्सीम करने के बाद बाक़ी के हक़दार होते हैं।

त़रका= मृतक की छोड़ी हुई सम्पत्ति

मोरिस= पूर्वज, पितृ, मृतक जो सम्पत्ति छोड़े।

वारिस= वह लोग जो मृतक के तरके के हक़दार हों।

वारिस का बहुवचन वरसा, वारिसीन, वारिसों।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

कोई भूखा न सोएगा अगर बर्बादी से बचा लें भोजन–

दुन्या में हर साल बर्बाद होने वाले खाद्य पदार्थ को बर्बाद होने से बचा लिया जाए तो सात अरब की आबादी में कोई भूखा नहीं सोएगा।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) के अनुसार धनाढय वर्ग की विलासिता और खेती–किसानी और अनाज के रखरखाव के गलत तौर तरीकों के कारण दुन्या में हर साल 1.3 अरब टन खाद्य पदार्थ बर्बाद हो जाता है। इसे मामूली उपायों से बचाया जा सकता है। यूएनइपी के अनुसार हर वर्ष दुन्या में कुल उत्पादित खाद्य पदार्थ का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद हो जाता है। यदि उपभोक्ता (उत्पादक) रिटेलर्स और होटल जैसे अतिथ्य उद्योग समन्वित रूप से मामूली उपाय भी करें तो प्रति वर्ष 1.3 अरब टन खाद्य पदार्थ को बर्बाद होने से बचाया जा सकता है और सात अरब की विशाल आबादी वाली दुन्या में कोई भूखा नहीं सोएगा। यूएनइपी ने खाद्य एवं कृषि संगठन (एफओए) तथा वेस्ट एंड रिसोर्स ऐक्शन प्रोग्राम (डब्लूआरएपी) जैसे संगठनों के साथ मिलकर खाद्यान्न बचाओ नाम से वैश्विक पहल की है। एफओए के अनुसार विकसित देशों के लोग पहले तो अपनी ज़रूरत से बहुत जियादा खरीदारी कर लेते हैं फिर खाने योग्य चीज़ों को कूड़े में फेंक देते हैं।

चाँद पर उतरा चीन का पहला रोवर–

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में चीन को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। चीन का पहला रोवर चांद की सतह पर उतरने में कामयाब रहा है। इसके साथ ही चांद की ज़मीन पर उतरने वाला चीन तीसरा देश बन गया है। जबकि, चांद पर अपना अंतरिक्ष यात्री भेजने की चीन की महात्वाकांक्षा के रास्ते भी खुल गए हैं। चीन के अंतरिक्ष यान रोवर चेंग–3 को चांद की धरती पर उतारा। रॉकेट से अलग होने के 12 दिनों बाद यह चांद की धरती पर पहुँचा है।

जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार मामले खोलने से इनकार–

स्विट्जरलैंड के प्रशासन ने कहा है कि पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले फिर से नहीं खोले जा सकते। पाकिस्तान सरकार के लिखे गए एक पत्र के जवाब में स्विस अधिकारियों ने ऐसा करने में असमर्थता जाहिर की है। पाकिस्तान सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश के बाद गत वर्ष नवम्बर में जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों को फिर से खोलने के लिए पत्र लिखा था।

पाकिस्तान के कानून मंत्री ने कहा कि स्विस अधिकारी पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत पूर्व राष्ट्रपति जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले नहीं खोल सकते। उनके हवाले से टेलीविजन समाचर चैनलों ने कहा कि स्विस अधिकारियों ने पाकिस्तान सरकार को भेजे एक पत्र में अपनी स्थिति बताई है। स्विस प्रशासन से पत्र प्राप्त होने की पुष्टि की। ❑❑